सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh
RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023
www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 02, अंक 177, नई दिल्ली । शुक्रवार, 06 सितम्बर 2024, मूल्य ₹ 5, पेज 8
देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

राजनीति अगर समाज सेवा है, तो सैलरी और पेंशन क्यो!!
राजनीति अगर नौकरी है, तो परीक्षा क्यों नहीं!!
पूछता है भारत देश

03 एन एस ई आर डी चेयरमैन कैफ़ आचार्य देव भवः पुरस्कार से सम्मानित
06 एक संपूर्ण मार्गदर्शिका एक प्रभावी विज्ञापन कैसे लिखें
08 यूनिवर्सिटी का नाम बदलने की टिप्पणी के विरोध में मशाल जुलूस

दिल्ली में पहली बार दौड़ेगी नमो भारत ट्रेन, 40 मिनट में पूरा होगा 72 किमी. का सफर

संजय बाटला

दिल्ली-मेरठ आरआरटीएस कॉरिडोर पर साहिबाबाद से न्यू अशोक नगर तक नमो भारत ट्रेन का ट्रायल रन नवंबर से शुरू होगा। यह ट्रेन न्यू अशोक नगर और मेरठ साउथ स्टेशनों के बीच की यात्रा को 35-40 मिनट में पूरा करेगी। न्यू अशोक नगर स्टेशन पर दो अतिरिक्त फुट ओवर ब्रिज 550 से अधिक दोपहिया और चार पहिया वाहनों के लिए पार्किंग स्थल और समर्पित पिक-अप और ड्रॉप-ऑफ प्वाइंट भी होंगे।

नई दिल्ली। दिल्ली- मेरठ कॉरिडोर आरआरटीएस पर साहिबाबाद से न्यू अशोक नगर के बीच करीब 12 किमी के खंड पर नमो भारत ट्रेन का ट्रायल रन नवंबर से शुरू हो जाएगा। एक बार चालू हो जाने के बाद न्यू अशोक नगर और मेरठ साउथ स्टेशनों के बीच की यात्रा 35 से 40 मिनट में हो सकेगी।

न्यू अशोक नगर आरआरटीएस स्टेशन की लंबाई लगभग 215 मीटर और चौड़ाई 30 मीटर है। कानकोर्स और प्लेटफॉर्म लेवल पूरे हो चुके हैं और छत का काम प्रगति पर है। न्यू अशोक नगर तक ट्रैक बिछाने का काम लगभग पूरा हो चुका है। ओएचई और सिग्नलिंग का काम भी प्रगति पर है।

दो अतिरिक्त फुट ओवर ब्रिज का निर्माण

आसपास के इलाकों से स्टेशन तक कनेक्टिविटी और पहुंच को बेहतर बनाने के लिए राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र परिवहन निगम (एनसीआरटीसी) स्टेशन पर दो अतिरिक्त फुट ओवर ब्रिज (एफओबी) का निर्माण भी कर रहा है। एक 42 मीटर लंबा- 6.5 मीटर चौड़ा एफओबी चिल्ला गांव और मयूर विहार एक्सटेंशन के आस-पास के इलाकों को आरआरटीएस स्टेशन से जोड़ेगा।

45 मीटर लंबा और आठ मीटर चौड़ा होगा एफओबी

स्टेशन के दूसरी तरफ, प्राचीन शिव मंदिर के पास 45 मीटर लंबा और आठ मीटर चौड़ा एफओबी बनाया जा रहा है, जिससे न्यू अशोक नगर इलाके के निवासियों को आसानी से स्टेशन तक पहुंचने में मदद मिलेगी।

चार पहिया वाहनों के लिए पार्किंग स्थल

स्टेशन के प्रवेश द्वार पर 550 से अधिक दोपहिया और चार पहिया वाहनों के लिए पार्किंग स्थल होंगे। यह पर्याप्त पार्किंग सुविधा निजी वाहनों से आने-जाने वाले यात्रियों के लिए सुविधा को काफी हद तक बढ़ाएगी। इसके अलावा, न्यू अशोक नगर स्टेशन पर वाहनों के लिए समर्पित पिक-अप और ड्रॉप-ऑफ प्वाइंट होंगे। स्टेशन पर आने या जाने वाले यात्रियों को ऑफ-रोड सर्विस लाइन का लाभ मिलेगा, जहां कैब और ऑटो उन्हें सुविधाजनक तरीके से उतार या उठा सकते हैं।

डीटीसी ड्राइवर नहीं कर पाएंगे कई शिफ्ट में काम, बायोमेट्रिक फेशियल सिस्टम खरीदेगी सरकार; हादसे पर लग सकेगी रोक

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली सरकार ने डीटीसी और क्लस्टर बस के ड्राइवरों को कई शिफ्टों में काम करने से रोकने के लिए एक बायोमेट्रिक फेशियल रिकग्निशन सिस्टम खरीदने का फैसला किया है। नई प्रणाली के तहत ड्राइवरों को एक दिन में केवल एक ही शिफ्ट में काम करने की अनुमति होगी और डिपो प्रबंधकों को यह सुनिश्चित करने के लिए जिम्मेदार ठहराया जाएगा कि नियमों का पालन किया जाए।

नई दिल्ली। दिल्ली परिवहन निगम (डीटीसी) और क्लस्टर बस के ड्राइवर अब कई शिफ्टों में काम नहीं कर पाएंगे। दिल्ली सरकार ड्राइवरों को कई शिफ्टों में काम करने से रोकने के निमित्त अपने बस डिपो के लिए बायोमेट्रिक फेशियल रिकग्निशन सिस्टम खरीद रही है। डीटीसी और कलस्टर बसों से जुड़ी कई दुर्घटनाओं के बाद परिवहन विभाग यह एहतियाती कदम उठा रहा है।

परिवहन विभाग के अधिकारियों ने बताया कि कई ऐसे मामले सामने आए हैं कि ड्राइवर एक दिन में कई शिफ्ट में एक से अधिक ऑपरेटर के साथ काम करते हैं। इससे थकावट होती है और ड्राइवर को झपकी आने के मामले सामने आए हैं। अधिकारी ने बताया कि अप्रैल में सीसीटीवी कैमरे की फुटेज सामने आई थी, जिसमें कथित तौर पर एक ड्राइवर को बस चलाते समय झपकी लेते हुए दिखाया गया था, जो दुर्घटनाग्रस्त हो गई थी।

नई प्रणाली आने के बाद डिपो प्रबंधक पर होगी कार्रवाई

ऐसा ही एक मामला जुलाई में सामने आया था जिसमें पश्चिमी दिल्ली में शिवाजी पार्क मेट्रो स्टेशन के पास दिल्ली परिवहन निगम की एक बस एक खंभे से टकरा गई, जिससे एक महिला की मौत हो गई और 34 लोग घायल हो गए। अधिकारी ने बताया कि नई पहचान प्रणाली स्थापित होने के बाद डिपो प्रबंधकों को जिम्मेदार मानते हुए कार्रवाई की जाएगी।

बता दें कि पिछले माह परिवहन मंत्री कैलाश गहलोत ने कहा था कि हाल की घटनाओं ने यात्रियों की सुरक्षा की चिंता बढ़ा दी है। ऐसे ड्राइवरों की जांच करने के लिए सख्त उपाय किए जाएं।

मेट्रो कर्मचारी ने कर डाली ऐसी हरकत, चंद मिनटों में हुआ बर्खास्त; खूब वायरल हो रहा मामला

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली मेट्रो के निर्माण विहार स्टेशन पर टिकट काउंटर पर यात्रियों से धोखाधड़ी करने वाले ऑपरेटर को डीएमआरसी ने बर्खास्त कर दिया है। ऑपरेटर यात्रियों को बातों में उलझाकर उनके पैसे चुरा रहा था। इस मामले में निजी कांट्रेक्टर पर भी जुर्माना लगाया गया है। डीएमआरसी ने सभी मेट्रो स्टेशनों के अधिकारियों को टिकट काउंटर का औचक निरीक्षण करने का निर्देश दिया है।

नई दिल्ली। दिल्ली में मेट्रो स्टेशन पर किराया भुगतान के लिए टिकट खरीदने के दौरान ठेके पर नियुक्त ऑपरेटर द्वारा यात्रियों से धोखाधड़ी करने का मामला सामने आया है। इससे संबंधित अलग-अलग दो वीडियो सोशल मीडिया पर प्रसारित हो रहे हैं। जिसमें मेट्रो स्टेशन पर यात्री से धोखाधड़ी का आरोप लगाया गया है।

इस पर संज्ञान लेते हुए दिल्ली मेट्रो रेल निगम (डीएमआरसी DMRC) ने मामले की जांच की। जिसके बाद डीएमआरसी ने ब्लू लाइन के निर्माण विहार मेट्रो स्टेशन के टिकट ऑफिस मशीन (टीओएम) के एक ऑपरेटर को नौकरी से बर्खास्त कर दिया। साथ ही निजी कांट्रेक्टर पर भी जुर्माना लगाया है।

डीएमआरसी ने मेट्रो स्टेशनों पर टिकट बिक्री की जिम्मेदारी ठेके पर निजी एजेंसियों को सौंप रखी है। डीएमआरसी का कहना है कि निर्माण विहार स्टेशन पर न्यूविजन कमर्शियल एंड एस्कार्ट सर्विस (एनसीईएस) नामक एजेंसी ने ऑपरेटर नियुक्त की है। सेवा की शर्तों के तहत इस एजेंसी पर कार्रवाई की गई है।

इसके अलावा डीएमआरसी ने सभी मेट्रो स्टेशनों के अधिकारियों को टिकट काउंटर का औचक निरीक्षण करने का निर्देश दिया है। इसके अलावा यात्रियों से भी अपील की है कि टिकट लेने के बाद काउंटर छोड़ने से पहले आपरेटर द्वारा वापस किए गए पैसे को ठीक से गिनती कर लें।

पीड़ित युवक ने एक्स पर पोस्ट किया वीडियो

असल में हर्ष राणा नामक एक व्यक्ति ने एक्स पर वीडियो पोस्ट कर टिकट काउंटर पर बैठे आपरेटर द्वारा यात्री से धोखाधड़ी से पैसा ठगने का आरोप लगाया। वीडियो आरोप लगाया गया है कि यदि कोई यात्री मेट्रो टिकट लेने के लिए 500 रुपये का नोट देता तो किराए का पैसा काटकर शेष राशि वापस करने के दौरान यात्री को बातों में उलझा कर ऑपरेटर बेहद चालाकी से सौ रुपये का एक नोट नीचे गिरा देता है और यात्री ठीक से ध्यान नहीं दे पाते।

वीडियो प्रसारित होने के बाद डीएमआरसी ने की कार्रवाई

इसी तरह के एक अन्य वीडियो में ब्लू लाइन पर लक्ष्मी नगर से वैशाली के बीच सभी मेट्रो स्टेशनों पर यात्रियों से धोखाधड़ी का आरोप ठेके पर नियुक्त एक आपरेटर ने ही लगाया है। इस खेल में सुपरवाइजर के भी शामिल होने का आरोप लगाया और कहा गया है कि आनंद विहार मेट्रो स्टेशन पर ड्यूटी लगाने के लिए आपरेटरों से 15 हजार रुपये रिश्वत वसूल किया जाता है। ये वीडियो प्रसारित होने के बाद डीएमआरसी ने कार्रवाई की है।

रोड सेफ्टी ऑडिट के लिए IIT इंजीनियर्स को दी जाएगी ट्रेनिंग, बड़ी संख्या में खुलेंगे ड्राइविंग स्कूल; हर दिन हो रहीं 462 मौतें

सड़क हादसों और मौतों को कम करने के लिए केंद्र सरकार आईआईटी इंजीनियरों की मदद लेगी। वे एक्सप्रेस-वे और नेशनल हाईवे का रोड सेफ्टी ऑडिट कर सुझाव देंगे। इससे ब्लैक स्पॉट का निस्तारण होगा। केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने भारत में सड़क सुरक्षा के लिए आम सहमति पर जानकारी दी। उन्होंने चालकों को बेहतर प्रशिक्षण देने और ड्राइविंग स्कूल खोलने पर जोर दिया।

नई दिल्ली। देशभर में सड़क हादसे और उनमें मरने वालों की संख्या में कमी लाने के लिए केंद्र सरकार आईआईटी के इंजीनियर की मदद लेगी। इसके तहत विभिन्न आईआईटी के इंजीनियर को विशेष प्रशिक्षण देकर प्रशिक्षित किया जाएगा।

फिर वे एक्सप्रेस-वे और नेशनल हाईवे का रोड सेफ्टी ऑडिट कर सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्रालय को सुझाव देंगे। इससे एक्सप्रेस-वे और नेशनल हाईवे के ब्लैक स्पॉट का होगा निस्तारण होगा।

केंद्रीय सड़क एवं परिवहन मंत्री नितिन गडकरी बुधवार को ताज होटल पैलेस में आयोजित इंजरी प्रिवेंशन और सेफ्टी प्रमोशन (सेफ्टी 2024) वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस में पहुंचे थे। उन्होंने विश्व स्वास्थ्य संगठन और द जॉर्ज इंस्टीट्यूट फॉर ग्लोबल हेल्थ की तरफ से आयोजित कॉन्फ्रेंस में पांच वर्षों के लिए 'भारत में सड़क सुरक्षा के लिए आम सहमति' पर जानकारी दी।

गडकरी ने कहा कि भारत में चालकों को बेहतर प्रशिक्षण देने की जरूरत है। इसके लिए बड़ी संख्या में ड्राइविंग स्कूल खोले जाएंगे। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि रोड इंजीनियरिंग के तहत रोड सेफ्टी ऑडिट शुरू कर दिया गया है। इसके तहत अभी तक 40 हजार करोड़ ब्लैक स्पॉट की पहचान कर उनमें सुधार किया गया है।

कान्फ्रेंस के आखिरी दिन नीति आयोग के सदस्य डॉ. विनोद के पाल ने कहा कि भारत सरकार आयुष्मान भारत स्वास्थ्य बीमा योजना के माध्यम से करीब 18 करोड़ परिवारों को कवर करती है। देश में औसतन प्रतिदिन 1,264 दुर्घटनाएं और 462 मौतें होती हैं।

क्या कहते है आंकड़े

461,312 सड़क हादसे हुए।
168,491 लोगों की गई जान।
443,366 लोग घायल हुए।
(नोटः यह डाटा साल 2022 का है)

दोपहिया वाहन निर्माता छूट पर हेलमेट उपलब्ध कराएं

केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने कहा कि दोपहिया वाहन निर्माताओं को वाहन खरीदने वालों को छूट या उचित दर पर हेलमेट उपलब्ध कराना चाहिए क्योंकि हेलमेट न पहनने के कारण सड़क दुर्घटनाओं में कई लोगों की मौत हो जाती है। गडकरी ने कहा कि 2022 में देश में दुर्घटनाओं में 50,029 लोगों की जान चली गई, जब उन्होंने हेलमेट नहीं पहना था।

दिल्ली में प्रदूषण के 24 नए हॉट स्पॉट की हुई पहचान, अब कुल 37 जगहों पर प्रदूषण का कहर

दिल्ली के प्रदूषण की समस्या और गंभीर हो गई है। पर्यावरण विभाग की एक नई रिपोर्ट के अनुसार शहर में 13 पुराने हॉट स्पॉट के अलावा 24 नए क्षेत्रों की पहचान की गई है जहां प्रदूषण का स्तर ज्यादा रहता है। इस बार सर्दियों में प्रदूषण से जंग के दौरान इन नए हॉट स्पॉट पर भी फोकस किया जाएगा और प्रदूषण की रोकथाम के लिए विशेष कदम उठाए जाएंगे।

नई दिल्ली। इलाज हुआ नहीं, मर्ज बढ़ता गया...। दिल्ली के प्रदूषण का हाल भी कुछ ऐसा ही है। यहां 13 हॉट स्पॉट तो सालों साल से बने ही हुए हैं, अब इस सूची में 24 नए नाम भी जुड़ गए हैं। हैरानी की बात यह कि कमोबेश हर वर्ष ही इन हॉट स्पॉट पर प्रदूषण की रोकथाम के लिए तमाम कार्य योजनाएं बनाई जाती हैं और बड़े बड़े दावे किए जाते हैं, लेकिन हकीकत पर्यावरण विभाग की रिपोर्ट स्वतः बयां कर रही है।

गौरतलब है कि दिल्ली में लगभग पांच साल पूर्व 13 ऐसे इलाकों की पहचान की गई थी, जहां आमतौर पर प्रदूषण का स्तर ज्यादा रहता है। इन्हें ही प्रदूषण के हॉट स्पॉट के तौर पर पहचाना जाता है। पर्यावरण विभाग की एक नई रिपोर्ट में इन 13 पुराने हॉट स्पॉट के अलावा 24 नए क्षेत्रों की पहचान भी की गई है। इस बार सर्दियों में प्रदूषण से जंग के दौरान इन नए हॉट स्पॉट पर भी फोकस किया जाएगा एवं प्रदूषण की रोकथाम के लिए विशेष कदम उठाए जाएंगे।

प्रदूषण के पुराने 13 हॉट स्पॉट

आनंद विहार, अशोक विहार, बवाना, द्वारका, जहांगीरपुरी, मुंडका, नरेला, ओखला, पंजाबी बाग, आरके पुरम, रोहिणी, विवेक विहार, वजीरपुर।

प्रदूषण के 24 नए हॉट स्पॉट

अलीपुर, आयानगर, बुराड़ी क्रासिंग, सीआरआरआइ मथुरा रोड, करणी सिंह शूटिंग रेंज, डीटीयू, डीयू नार्थ कैंपस, आइजीआइ टी-3, इहबास, आइटीओ, जेएलएन स्टेडियम, लोधी रोड, नजफगढ़, नेशनल स्टेडियम, नेहरू नगर, न्यू मोती बाग, एनएसयूटी, पटपड़गंज, पूसा (न्यू दिल्ली), पूसा (सेंट्रल), शादीपुर, सिरीफोर्ट, सोनिया विहार, श्री अरबिन्दो मार्ग।

प्रदूषण के कारक

टूटी सड़कें, फुटपाथ, कचरे के ढेर, यातायात जाम, खुले में कचरे में आग लगाना, सड़कों से उठती धूल।

क्या किया जाना चाहिए?

तात्कालिक नहीं, दीर्घकालिक कार्ययोजना बनाई जाए। कोई भी कार्ययोजना बनाने के साथ साथ उसके क्रियान्वयन पर भी गंभीरता से ध्यान दिया जाए। संबंधित अधिकारियों की जवाबदेही तय हो एवं साप्ताहिक या पाक्षिक स्तर पर रिपोर्ट भी मांगी जाए ताकि परिणाम सामने आ सके। जब कारक भी सामने हों तो उन्हें दूर करने में समय नहीं लगना चाहिए।

वराह जयंती व्रत से होता है आध्यात्मिक विकास

वराह जयंती त्योहार भाद्रपद के महीने में शुक्ल पक्ष के तीसरे दिन मनाया जाता है। इस दिन भक्त सुरक्षा, समृद्धि और आध्यात्मिक विकास के लिए उपवास रखते हैं, पूजा करते हैं और विष्णु मंत्रों का जाप करते हैं।

वराह जयंती एक हिंदू त्योहार है, जो भगवान विष्णु के तीसरे अवतार भगवान वराह के जन्म का जश्न मनाता है। भगवान वराह ने राक्षस हिरण्याक्ष से पृथ्वी को बचाने के लिए सूअर के रूप में अवतार लिया तो आइए हम आपको वराह जयंती का महत्व एवं पूजा विधि के बारे में बताते हैं।

जानें वराह जयंती के बारे में

वराह जयंती त्योहार भाद्रपद के महीने में शुक्ल पक्ष के तीसरे दिन मनाया जाता है। इस दिन भक्त सुरक्षा, समृद्धि और आध्यात्मिक विकास के लिए उपवास रखते हैं, पूजा करते हैं और विष्णु मंत्रों का जाप करते हैं। भगवान विष्णु को समर्पित मंदिर, विशेष रूप से वराह मूर्तियों वाले मंदिरों में विशेष प्रार्थना और अनुष्ठान होते हैं। यह त्योहार बुराई पर अच्छाई की जीत और धर्म की रक्षा का प्रतीक है।

वराह जयंती का शुभ मुहूर्त

पंचांग के अनुसार, वराह जयन्ती शुक्रवार, सितम्बर 6, 2024 को मनाया जाएगा। उस दिन वराह जयन्ती मुहूर्त दोपहर 01:32 से 04:00 बजे तक है। पूजा की अवधि कुल 02 घण्टे 28 मिनट है।

तृतीया तिथि प्रारम्भ - सितम्बर 05, 2024 को 13:51 बजे

तृतीया तिथि समाप्त - सितम्बर 06, 2024 को 16:31 बजे

वराह जयंती का है खास महत्व

वराह जयंती भगवान विष्णु के श्रद्धेय तीसरे अवतार वराह, शक्तिशाली सूअर के रूप में मनाई जाती है। यह अभिव्यक्ति बुराई पर अच्छाई की अंतिम जीत और ब्रह्मांडीय सद्भाव की बहाली का प्रतीक है। किंवदंती है कि पृथ्वी को राक्षस हिरण्याक्ष के चंगुल से बचाने के लिए भगवान विष्णु ने ₹वराह₹ के रूप में अवतार लिया था। यह त्योहार न केवल इस उल्लेखनीय घटना का जश्न मनाता है, बल्कि विपरीत परिस्थितियों में धार्मिकता, साहस और विश्वास को बनाए रखने के महत्व की मार्मिक याद भी दिलाता है। यह बुरी ताकतों पर दैवीय हस्तक्षेप की विजय का प्रतीक है, जो भक्तों को इन मूल्यों को अपने जीवन में अपनाने के लिए प्रेरित करता है। वराह जयंती मनाकर, भगवान विष्णु के अनुयायी बुराई के खिलाफ लड़ने और अच्छाई और न्याय के सिद्धांतों को बनाए रखने की अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि करते हैं।

वराह जयंती के दिन ऐसे करें भगवान विष्णु की पूजा

वराह जयंती पर, भक्त बड़े उत्साह और समर्पण के साथ भगवान विष्णु की पूजा करते हैं। पूजा विधि में भगवान को प्रसन्न करने के लिए अनुष्ठानों की एक श्रृंखला शामिल होती है। इसकी शुरुआत पवित्र स्नान और साफ कपड़े पहनने से होती है। फिर, भगवान वराह की छवि या मूर्ति के साथ एक पवित्र वेदी स्थापित की जाती है। भक्त वराह गायत्री और विष्णु सहस्रनाम जैसे पवित्र मंत्रों के जाप के साथ भगवान को फूल, फल और नैवेद्य चढ़ाते हैं। दूध, दही और घी से एक विशेष अभिषेक किया जाता है। फिर भगवान को नए वस्त्र और आभूषणों से सजाया जाता है। पूजा आरती, प्रसाद वितरण और सुरक्षा, समृद्धि और आध्यात्मिक विकास के लिए भगवान वराह से हार्दिक प्रार्थना के साथ समाप्त होती है। भक्त भगवान का आशीर्वाद पाने के लिए दिन भर का उपवास भी रखते हैं, जिसे पूजा के बाद ही तोड़ते हैं। इस पूजा विधि का पालन करके, भक्त भगवान विष्णु की दिव्य ऊर्जा से जुड़ना चाहते हैं और धार्मिकता और साहस के मूल्यों को अपनाना चाहते हैं।

वराह जयंती से जुड़ी पौराणिक कथा भी है खास

दिति के गर्भ से हिरण्याक्ष एवं हिरण्यकशिपु ने जन्म सौ वर्षों के गर्भ के पश्चात लिया, इस कारण जन्म लेते ही उनका रूप विशालकाय हो गया। हिरण्याक्ष एवं हिरण्यकशिपु ने ब्रह्मा जी से वरदान प्राप्त किया। और चारो तरफ अपने अत्याचारों से हां हां कार मचा दी। एक बार हरिण्यकश्यप ने वरूण देव को युद्ध के लिये ललकारा तब वरूण ने विनम्रता से कहा कि आपसे टक्कर लेने साहस केवल भगवान विष्णु में ही हैं। हिरण्याक्ष जब विष्णु जी की खोज कर रहा था तब उसे नारदमुनि से पता चला कि भगवान विष्णु वराह अवतार लेकर रसातल से पृथ्वी को समुद्र से ऊपर ला रहे हैं। हरिण्याक्ष समुद्र के नीचे रसातल तक जा पंहुचा। वहां उसने देखा कि वराह रूपी भगवान विष्णु अपने दांतो पर धरती उठाए चले जा रहे है। उसने भगवान विष्णु को ललकारा। लेकिन वह शांत चित से आगे बढ़ते रहे और जब भगवान विष्णु उचित आधार देकर पृथ्वी को स्थापित कर दिया तो उन्होंने हिरण्याक्ष से कहा कि सिर्फ बातें ही करना जानते हो या लड़ने का साहस भी रखते हो। जैसे ही उसने वराहरूपी भगवान विष्णु पर प्रहार किया और उनकी ओर झपटा। पलक झपकते ही भगवान विष्णु ने अपने सुदर्शन चक्र से, उसका संहार किया। भगवान के हाथों मृत्यु भी मोक्ष देती है। हरिण्याक्ष सीधा बैंकुठ लोक गमन कर गया। इस प्रकार भगवान विष्णु ने हरिण्याक्ष का वध करने उद्देश्य से ही वराह अवतार के रूप में जन्म लिया। संयोग से जिस दिन वराह रूप में भगवान विष्णु प्रकट हुए वह भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि थी इसलिये इस दिन को वराह जयंती के रूप में भी मनाया जाता है।

इन मंदिरों में मनाई जाती है वराह जयंती

वराह जयंती का त्यौहार भारत के विभिन्न हिस्सों में बहुत खुशी और उत्साह के साथ मनाया जाता है लेकिन वहां कुछ जगहें और मंदिर हैं जहां त्योहार को बहुत ख़ुशी से और इसे बहुत महत्व के साथ मनाया जाता है। मथुरा में, भगवान वराह का एक बहुत पुराना मंदिर है जहां उत्सव एक भव्य स्तर पर होता है। वराह जयंती के उत्सव के लिए मशहूर एक और मंदिर तिरुमाला में स्थित भु वराह स्वामी मंदिर है। इस त्यौहार की पूर्व संध्या पर, देवता की मूर्ति को नारियल के पानी, दूध, शहद, मक्खन और घी के साथ नहला कर पूजा की जाती है।

जानें वराह जयंती के अनुष्ठान के बारे में

वराह जयंती का त्यौहार मुख्य रूप से दक्षिण भारत के राज्यों में मनाया जाता है। भक्त सुबह उठते हैं, पवित्र स्नान करते हैं और फिर मंदिर या पूजा की जगह साफ करते हैं और अनुष्ठानों को करना शुरू करते हैं।

भगवान विष्णु या भगवान वराह की मूर्ति को एक पवित्र धातु के बर्तन (कलाश) में रखा जाता है, जिसे बाद में नारियल के साथ आम की पत्तियों और पानी से भरा जाता है। इन सभी चीजों को तब ब्राह्मण को दान दिया जाता है।

सर्वशक्तिमान को खुश करने के लिए, भक्त भजन का जप करते हैं और श्रीमद् भगवद् गीता को पढ़ते हैं।

वराह जयंती उपवास करने वाले भक्तों को वराह जयंती की पूर्व संध्या पर जरूरतमंद लोगों को कपड़े और पैसा दान करने की आवश्यकता होती है। जैसा कि माना जाता है कि जरूरतमंदों को चीजों की पेशकश भगवान विष्णु के आशीर्वाद प्राप्त करने में मदद करती है।

छोटे किचन में इन तरीकों से बनाएं बर्तन रखने की जगह, आजमाएं ये हैक्स

कई बार जल्दबाजी में हम बर्तनों को बेतरतीब ढंग से दराज में फेंक देते हैं। छोटे-छोटे टूल्स और अप्लायंसेस काउंटर स्पेस घेर लेते हैं औऱ अलमारियां बर्तनों से भर जाती हैं। अव्यवस्थित किचन कम आकर्षक लगता है।

किचन घर का दिल कहा जाता है और किचन में ही सबसे ज्यादा चीजें अव्यवस्थित रहती हैं। ऐसे में अगर किचन अव्यवस्थित होता है, तो किसी को भी देखकर अच्छा नहीं लगेगा। कई बार जल्दबाजी में हम बर्तनों को बेतरतीब ढंग से दराज में फेंक देते हैं। छोटे-छोटे टूल्स और अप्लायंसेस काउंटर स्पेस घेर लेते हैं औऱ अलमारियां बर्तनों से भर जाती हैं।

अव्यवस्थित किचन कम आकर्षक लगता है। जिसके कारण किचन में साफ-सफाई करना भी मुश्किल हो जाता है। ऐसे में यदि आपका किचन छोटा है, तो आप किचन को इन ट्रिक्स की मदद से व्यवस्थित कर सकते हैं।

अंडर कैबिनेट हुक

खाना बनाने के लिए हमारे किचन में छोटे से लेकर बड़े सभी तरह के बर्तन होते हैं। ऐसे में सभी बर्तनों को एक साथ कैबिनेट में रखने से अच्छा है कि इनको व्यवस्थित तरीके से रखा जाए। आप किचन के बर्तनों को स्टोर करने के लिए अंडर कैबिनट हुक का इस्तेमाल कर सकते हैं। हर तरह के बर्तनों को टांगने के लिए आप अपने कैबिनेट के नीचे का उपयोग हुक या रेल लगाकर करें।

ड्रॉइर डिवाइडर्स

किचन में बर्तनों को एक साथ रखने से वह खराब हो सकते हैं। इसलिए अच्छा है कि आप बर्तनों को व्यवस्थित करने के लिए ड्रॉअर डिवाइडर का इस्तेमाल कर सकती हैं। आप ड्रॉअर डिवाइडर में बर्तनों को व्यवस्थित तरीके से रख सकती हैं। इसमें आप छोटे-बड़े सभी बर्तनों को आसानी से रख सकते हैं। साथ ही बर्तन को ढूंढने के लिए हड़बड़ी भी नहीं होगी।

वर्टिकल ड्रॉअर इंसर्ट

ड्रॉअर स्पेस के अंदर सीधे खड़े होने वाले वर्टिकल ड्रॉअर इंसर्ट कर सकती हैं। इन जगहों को आप लैडल, स्पैटुला और चिमटे जैसे बर्तनों को टांग सकते हैं। यह आपके काउंटर स्पेस को बड़ा बनाता है और आपके पास ज्यादा स्पेस भी होगा। इससे खाना बनाना आसान होता है। बता दें कि इन इंसर्ट लगाने से ड्रॉअर स्पेस ज्यादा बढ़ता है। जिसमें आप अन्य बर्तन रख सकते हैं।

ढक्कन वाली कटलरी ट्रे

किचन में ऐसी एक ट्रे होनी चाहिए, जिसमें ढक्कन लग सके। बता दें कि ऐसी ट्रे कटलरी रखने के काम आती है और आप ढक्कन वाली कटलरी ट्रे अलग-अलग कटलरी जैसे- नाइफ, चम्मच और बर्तन आदि को व्यवस्थित कर सकती हैं। आप कॉम्पैक्ट जगह में बर्तनों को रख सकते हैं। वहीं कटलरी में धूल नहीं जमती और यह बर्तनों को भी व्यवस्थित रखता है।

हैंगिंग रैक या रेल

आप छोटी रसोई में चीजों को स्टोर करने के साथ डेकोर का भी ध्यान रख सकते हैं। आप बर्तन को स्टोर करने के लिए बास्केट या कंटेनर टांगने के लिए किचन की दीवारों पर हैंगिंग रैक या रेल लगवा सकती हैं। यह न सिर्फ दराज से बचाता है, बल्कि किचन को डेकोर भी करता है।

अलमारी में शेल्व

अक्सर कांच के बर्तनों को हम अलमारियों में रखते हैं। लेकिन अगर किचन में बर्तन रखने की अलमारी हो, तो आप उसमें 2-3 शेल्व और लगवा सकते हैं। इससे स्पेस भी ज्यादा हो जाएगा और अन्य बर्तन भी आ जाएंगे। ऐसे में अगर आप नई अलमारी बनवाने की सोच रहे हैं, तो पहले उसको पुरानी अलमारी से कंपेयर कर लें। नई अलमारी में 2-3 शेल्व एक्स्ट्रा लगवा लें। आप चाहें तो शेल्व में स्लाइडिंग इंसर्ट करवा सकते हैं, उसमें आप छोटे चम्मच रख सकते हैं। इससे किचन पहले से सुंदर लगेगा।

कॉर्नर का इस्तेमाल

बता दें कि रसोई छोटी हो या बड़ी, लेकिन रसोई का हर इंच मायने रखता है। वहीं कुछ जगहें ऐसी भी होती हैं, जिनको हम अनदेखा कर देते हैं। लेकिन इन जगहों को आप क्रिएटिव और स्टाइलिश स्टोरेज स्पेस में बदल सकते हैं। आप कॉर्नर का इस्तेमाल कर हैंगिंग स्टोरेज हैक बना सकते हैं। किचन की किसी भी दीवार के कॉर्नर में शेल्व लगवा सकती हैं। इन जगहों पर प्लेट्स, कप्स और मग्स आदि रख सकते हैं। इससे किचन का कॉर्नर

दूषित खाने या पानी से फैल सकता है मंकीपॉक्स, जानिए क्या कहते हैं एक्सपर्ट

मंकीपॉक्स वायरस संक्रमति व्यक्ति के कपड़े, बेड और तौलिए से इंफेक्शन फैल सकता है। जो लोग जानवरों के आसपास रहने या काम करने से भी यह वायरस हो सकता है। इस वायरस के लक्षणों में सिरदर्द, मांसपेशियों में दर्द और बुखार और रैश हो सकते हैं।

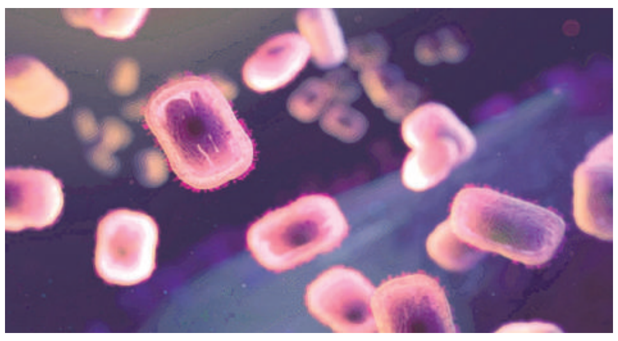

मंकीपॉक्स ऐसी वायरल बीमारी है, जो संक्रमित जानवर से इंसानों में फैल सकता है। बता दें कि बीमार या फिर मरे हुए जानवरों के संपर्क में आने से व्यक्ति को मंकीपॉक्स हो सकता है। यह संक्रमण एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में आसानी से फैल जाता है। संक्रमति व्यक्ति के कपड़े, बेड और तौलिए से इंफेक्शन फैल सकता है। जो लोग जानवरों के आसपास रहने या काम करने से भी यह वायरस हो सकता है।

इसके अलावा यह वायरल प्रेग्नेंट महिला के जरिए गर्भ में भी हो सकता है। मंकीपॉक्स से संक्रमित व्यक्ति के संपर्क में आने से भी यह वायरस हो सकता है। हालांकि इसके लिए लंबे समय तक निकट संपर्क की आवश्यकता होती है। इस वायरस के लक्षणों में सिरदर्द, मांसपेशियों में दर्द और बुखार और रैश हो सकते हैं। लेकिन कई लोगों के मन में यह सवाल रहता है कि क्या दूषित खाने और दूषित पानी से भी यह वायरस फैल सकता है। तो आइए जानते हैं मंकीपॉक्स वायरस और साथ ही यह भी जानेंगे कि यह कैसे फैलता है।

क्या दूषित भोजन या पानी से भी फैलता है ये वायरस

हेल्थ एक्सपर्ट के मुताबिक मंकीपॉक्स दूषति खाने या पानी से नहीं फैलता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार, अगर आपने किसी ऐसे जानवर का मीट खाया है, जिसके बॉडी में यह वायरस हो और उस मीट को सही तरीके से नहीं पकाया गया हो। ऐसे में इस मीट को खाने से आपको मंकीपॉक्स हो सकता है। इसके अलावा अगर किसी ऐसे व्यक्ति ने भोजन को छुआ है, जिसके शरीर से कीटाणु खाने में प्रवेश कर सकते हैं। इस तरह से आपको भोजन के जरिए मंकीपॉक्स हो सकता है।

इसके अलावा संक्रमित व्यक्ति के सालाइवा माध्यम से भी मंकीपॉक्स हो सकता है। एक स्टडी के मुताबिक मंकीपॉक्स संक्रमति जानवर के सीधे संपर्क में आने से फैलता है। ऐसे में संक्रमित जानवर का मीट खाने से मंकीपॉक्स फैल सकता है।

बरतें ये सावधानी

बता दें कि खाने से पहले और खाना बनाने से पहले पानी और साबुन से हाथों को अच्छे से धोना चाहिए।

वहीं अन्य सब्जियों, फल और अन्य खाद्य पदार्थों को अच्छे से धोकर साफ करें। साथ ही यह सुनिश्चित करें कि खाना ठीक तरह से पकाया जाए।

खासकर मांस को अच्छे से धोकर बनाना चाहिए, जिससे कि कोई भी मौजूदा हानिकारक बैक्टीरिया या वायरस नष्ट हो जाएं।

कच्चा या अधपका खाना खाने से बचना चाहिए।

दूसरों के बर्तन, गिलास या अन्य खाने-पीने के उपकरण साझा नहीं करें। खासकर यदि कोई व्यक्ति बीमार हों।

सिर्फ स्वच्छ और सुरक्षित पानी का सेवन करना चाहिए।

भगवान शंकर पार्वजी जी के समक्ष प्रगट क्यों नहीं हुए ?

सज्जनों! यहाँ भोलनाथ अपने वियोगी हृदय से भी संसार को एक बहुत ही सुंदर संदेश देना चाह रहे हैं। आप जानते हैं, कि भगवान शंकर की पत्नी देह त्याग चुकी हैं। श्रीसती जी के जाने के पश्चात, भगवान शंकर के हृदय में वैराग्य ने डेरा जमा लिया है।

माँ पार्वती जी ने अपनी कठोर तपस्या से भगवान शिव को प्रसन्न कर लिया था। किंतु प्रश्न उठता है, कि अगर भगवान शंकर सच में प्रसन्न हो गए थे, तो वे स्वयं पार्वती जी के समक्ष प्रगट क्यों नहीं हुए। वहाँ केवल आकाशवाणी ही क्यों हुई?

वास्तव में जब से श्रीसती जी ने प्रजापति दक्ष के यज्ञ में अग्निस्नान किया था, तब से भगवान शंकर के हृदय में वैराग्य छा गया था। वे सदा आठों पहर, श्रीरघुनाथ जी के नाम जप में ही लगे रहते थे। उन्हें जहाँ कहाँ भी भगवान श्रीराम जी की कथायें श्रवण करने को मिलती, वे वहीं कथा सुनने बैठ जाते-

'जब तें सतीं जाइ तनु त्यागा।
तब तें सिव मन भयउ बिरागा।।
जपहिं सदा रघुनायक नामा।,
जहँ तहँ सुनहिं राम गुन ग्रामा।।'

सज्जनों! यहाँ भोलनाथ अपने वियोगी हृदय से भी संसार को एक बहुत ही सुंदर संदेश देना चाह रहे हैं। आप जानते हैं, कि भगवान शंकर की पत्नी देह त्याग चुकी हैं। श्रीसती जी के जाने के पश्चात, भगवान शंकर के हृदय में वैराग्य ने डेरा जमा लिया है। वे अत्यंत उदास हैं। निःसंदेह यह होना स्वाभाविक भी है। क्योंकि संसार में भी किसी व्यक्ति की पत्नि का देहाँत हो जाये, तो वह व्यक्ति भी मानों टूट ही जाया करता है। उसे लगता है, कि मानों उसका संपूर्ण जगत ही उजड़ गया है। शायद भगवान शंकर को भी ऐसा ही प्रतीत हो रहा होगा। किंतु क्या सच में भगवान शंकर को अपनी पत्नी के बिछुड़ने का ही दुख था? क्योंकि एक संसारिक व्यक्ति की पत्नी बिछुड़े तो समझ आता है, कि वह दुखी है। क्योंकि वह तो मोह से ग्रसित एक साधारण मानव है। किंतु भगवान शंकर कोई संसारिक मानव की भाँति मोह से पीड़ति थोड़ी न हैं, जो कि वे दुख के मारे दर-दर भटकते फिरें। भला फिर क्या कारण था, कि भगवान शंकर मायावी लोगों की भाँति, पत्नि के जाने के पश्चात वैराग्य धारण कर लेते हैं?

वास्तव में भगवान शंकर श्रीसती जी को, केवल अपनी पत्नी रुप में ही नहीं देख रहे हैं, अपितु उन्हें श्रीसती जी में अपना एक परम भक्त दृष्टिपात हो रहा है-

'जदपि अकाम तदपि भगवाना।
भगत बिरह दुख दुखित सुजाना।।'

गोस्वाती तुलसीदास जी इस चौपाई में श्रीसती जी का, भगवान शंकर जी के साथ संबंध कोई पति-पत्नी का न कहकर, ईश्वर व भक्त का संबंध बता रहे हैं। वे कहते हैं, कि यद्यपि सुजान भगवान शंकर निष्काम हैं, किंतु तब भी अपने 'भक्त' के वियोग के दुख से दुखी हैं। इसका तात्पर्य स्पष्ट है, कि भगवान शंकर को अपनी पत्नी के जाने का नहीं, अपितु अपने एक महान भक्त व सेवक के चले जाने का दुख था।

भगवान के लिए अपने भक्त से बढ़कर कुछ भी तो नहीं होता। अपने सेवक के मान से ही वे बँधे होते हैं। अगर उन्हें अपने भक्त से प्रेम न हो, तो वे अर्जुन का रथ न खींचते। धन्ना जाट के खेतों में जाकर हल न चलाते। संपूर्ण जगत को भोजन देने वाले, शबरी के जूठे बेरों का सेवन न करते। ठीक इसी प्रकार से भगवान शंकर भी अपनी परम सेविका श्रीसती जी के जाने से दुखी हैं।

अगर एक क्षण के लिए कल्पना भी कर ली जाये, कि भगवान शंकर को, हम संसारिक जीवों की भाँति ही मोह है, और वे भी हमारी ही प्रकार दुखी हैं। तो इस दावे से क्या हमें प्रसन्नता प्राप्त हो जायेगी?

क्योंकि मान लीजिए, कि भगवान शंकर को पत्नी वियोग का दुख है, तो ऐसे में आप यह तो देखो, कि वे क्रिया क्या कर रहे हैं। क्या हमारी तरह वे छाती पीट-पीट कर रो रहे हैं? या फिर किसी मदिरालय में जाकर सुध बुध खोकर कहीं बेसुध पड़े हैं। नहीं न? ऐसा तो कुछ भी नहीं है। तो फिर क्या कर रहे हैं, हमारे भोलेनाथ? श्रीमान जी! इस अवस्था में भी भगवान शंकर 'श्रीराम कथा' को सुनना नहीं छोड़ रहे हैं। जहाँ तहाँ भी उन्हें श्रीराम जी के गुनगाण श्रवण करने को मिल जायें, वे इस शुभ अवसर का लाभ लेने से चूकते नहीं हैं। मानों हम मायावी जीवों को समझा रहे हैं, कि अगर आपका भी कोई संसारिक रिश्ता पीछे छूट जाये, तो रो-रो कर पागल मत हो जाना। अपितु भगवान के गुण गाथा को श्रवण करना मत भूलना। क्योंकि यही जीवन का सार है, लक्षय है। यही कल्याण का मार्ग है।

दिल्ली-एनसीआर में झमाझम बारिश शुरू, मौसम हुआ सुहाना; फिर मंडराया जलभराव का खतरा

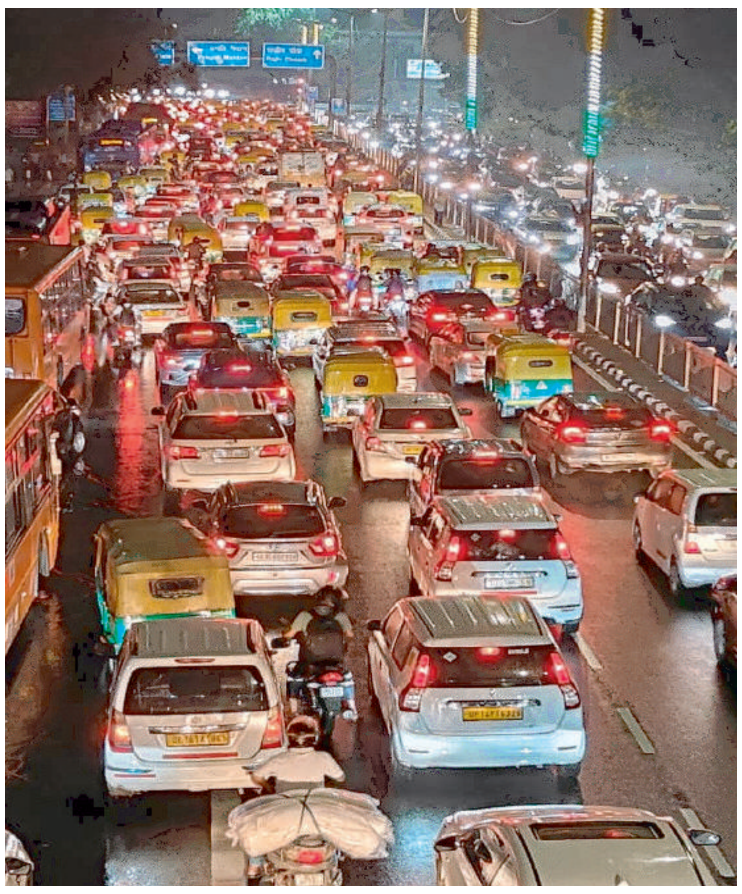

परिवहन विशेष

दिल्ली-एनसीआर में तेज हवाओं के साथ बारिश शुरू हो गई है। बारिश होने से लोगों को गर्मी और उमस से राहत मिली है। वहीं तेज बारिश होने से दिल्ली और नोएडा में लोगों को फिर से जलभराव की समस्या का सामना करना पड़ सकता है। वहीं बुधवार को भी दिल्ली-एनसीआर के कई इलाकों में झमाझम बारिश हुई थी।

नईदिल्ली। दिल्ली-एनसीआर में तेज गरज के साथ बारिश शुरू हो गई है। एनसीआर के कई इलाकों में बारिश हो रही है। बारिश होने से फिर जलभराव और ट्रैफिक जैसी समस्याओं से सामना करना पड़ रहा है।

दिल्ली-एनसीआर में बारिश होने के बाद विकास मार्ग पर लंबा जाम लग गया है। जाम में वाहन फंसे हुए हैं।

सड़कों पर फिर मंडराया जलभराव का खतरा

दिल्ली-एनसीआर में तेज बारिश होने से एक बार फिर से सड़कों पर जलभराव होने का खतरा मंडरा गया है। वहीं, सड़कों पर जाम लगने से कई मार्गों पर ट्रैफिक जाम भी लग सकता है।

बता दें कि बुधवार को भी ऑरेंज अलर्ट के बीच पूरे एनसीआर में झमाझम बरसात हुई थी। दिनभर बनी रही बादलों की आवाजाही के बीच कहीं हल्की तो कहीं तेज वर्षा देखने को मिली। गुरुग्राम में 67 मिमी बरसात हुई, जो केवल डेढ़ घंटे में रिकॉर्ड की गई।

दिल्ली में भी आयानगर में अच्छी बरसात हुई। मौसम विभाग की मानें तो गुरुवार को भी बरसात का यह सिलसिला जारी रहेगा। येलो अलर्ट भी जारी किया गया है।

दिल्ली के आसपास हुई जमकर बारिश

वैसे तो एनसीआर के सभी शहरों में वर्षा का सिलसिला मंगलवार रात से ही शुरू हो गया था। बुधवार को यह रुक रुककर दिनभर चलता रहा। धूप नहीं के बराबर ही निकली। दिल्ली के विभिन्न इलाकों के साथ-साथ गुरुग्राम और फरीदाबाद के भी विभिन्न हिस्सों में भारी बरसात दर्ज की गई।

गर्मी के तेवर हुए कम

इसका असर गर्मी के तेवर व तापमान पर भी देखा गया। यह भी बता दें कि मौसम विभाग ने पहले बुधवार के लिए येलो अलर्ट जारी किया गया था, जोकि बाद में फिर ऑरेंज अलर्ट में बदल दिया गया।

बुधवार को कितना रहा तापमान

बुधवार को दिल्ली का अधिकतम तापमान सामान्य से दो डिग्री कम 32.4 डिग्री जबकि न्यूनतम तापमान सामान्य स्तर पर 25.2 डिग्री रिकॉर्ड किया गया। हवा में नमी का स्तर 100 से 70 प्रतिशत तक रहा। वर्षा सुबह साढ़े आठ बजे तक 0.8 मिमी जबकि सुबह साढ़े आठ बजे से शाम साढ़े पांच बजे तक 11.3 मिमी दर्ज की गई।

कविता : एक अधूरा ख्वाब रह गया

एक अधूरा ख्वाब रह गया।
साथ तेरा चाहिए था,
उसे कोई और ले गया।
मैं भावनाओं में बहके,
वो सब कुछ सह गया।
जिंदगी के यादगार,
लम्हों को वो ले गया।
सीने में तस्वीर है तेरी,
शरीर कोई और ले गया।
बहते रहेंगे यादों के मंजर,
खयाल कोई और ले गया।
सुकून से जी लें ये जिंदगी,
मेरे कानों में कोई कह गया।
बस, तेरा साथ पाने का,
एक अधूरा ख्वाब रह गया।

संजय एम. तराणेकर
(कवि, लेखक व समीक्षक)
इंदौर (मध्यप्रदेश)
98260-25986

दिल्ली की जेलों में नौकरी का सुनहरा मौका, 3200 से ज्यादा पदों पर होगी भर्ती; एलजी ने दी मंजूरी

परिवहन विशेष

दिल्ली की जेलों में 3200 से ज्यादा पदों पर भर्ती का सुनहरा मौका है। एलजी वीके सक्सेना ने इसे मंजूरी दे दी। जेलों में अधीक्षक उप-अधीक्षक सहायक अधीक्षक हेड वार्डर हेड मैट्रन वार्डर अनुभाग अधिकारी लेखा अधिकारी सहायक और ड्राइवर आदि पदों पर जल्द भर्ती होगी। एलजी ने इन पदों को अगले छह महीने में भरने के निर्देश दिए हैं।

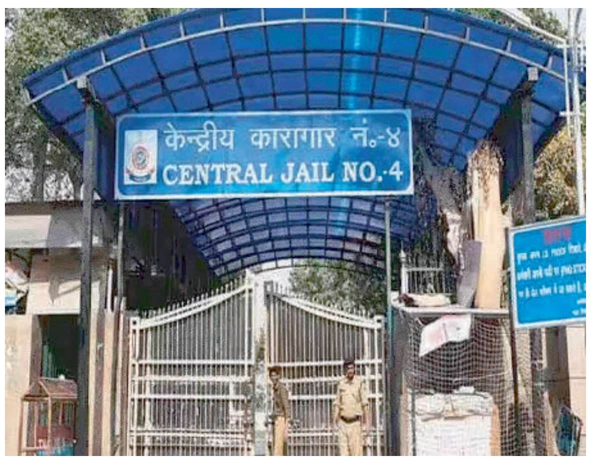

नई दिल्ली। दिल्ली के एलजी वीके सक्सेना ने राजधानी के जेलों में 3200 से ज्यादा पदों पर भर्ती निकालने की मंजूरी दे दी है। एलजी कार्यालय ने बताया कि दिल्ली के जेलों में 3247 पदों का सृजन किया जाएगा। इन पदों में अधीक्षक, उप-अधीक्षक, सहायक अधीक्षक, हेड वार्डर, हेड मैट्रन, वार्डर, अनुभाग अधिकारी, लेखा अधिकारी, सहायक और ड्राइवर आदि शामिल हैं। एलजी कार्यालय ने कहा कि यह कदम दिल्ली की जेलों में विभिन्न संवर्गों में कर्मचारियों की कमी के साथ-साथ भविष्य की आवश्यकताओं को भी पूरा करेगा। एलजी ने छह महीने के भीतर पदों को भरने का निर्देश दिया है।

एलजी ने 629 कर्मचारियों को सौंपा था नियुक्ति पत्र

बता दें, एलजी सक्सेना ने हाल ही में 27 चिकित्सकों सहित दिल्ली सरकार और दिल्ली विकास प्राधिकरण (डीडीए) में नवनियुक्त 629 कर्मचारियों को नियुक्ति पत्र सौंपा था। इस मौके पर उन्होंने कहा था कि दिल्ली राज्य अधीनस्थ सेवा भर्ती बोर्ड (डीएसएसएसबी) द्वारा भर्ती प्रक्रिया में तेजी लाई गई है और हमारा लक्ष्य मार्च 2025 तक 20,000 और लोगों को नियुक्त करना है।

उन्होंने बताया कि इस समय लगभग 18,000 रिक्तियां भर्ती के विभिन्न चरणों में हैं, जिन्हें जल्द पूरा किया जाएगा। अभी दिल्ली सरकार के विभिन्न विभागों में करीब 25,000 पद खाली हैं। नई नियुक्तियों से खाली पड़े पदों में कमी आएगी।

नए हाई एनर्जी लीनियर एक्सेलेरेटर के लिए रेडिएशन बंकर के निर्माण का शिलान्यास

परिवहन विशेष न्यूज

नईदिल्ली। वीएमएमसी और सफदरजंग अस्पताल की चिकित्सा अधीक्षक डॉ. वंदना तलवार ने नए हाई एनर्जी लीनियर एक्सेलेरेटर के लिए रेडिएशन बंकर के निर्माण का उद्घाटन किया। समारोह के दौरान, डॉ. तलवार ने सफदरजंग अस्पताल को भारत के प्रमुख कैंसर उपचार केंद्रों में से एक में बदलने के लिए हर संभव प्रयास करने का संकल्प लिया। अस्पताल पहले से ही एक समर्पित ऑन्कोलॉजी ब्लॉक की योजनाओं को आगे बढ़ा रहा है, जो कैंसर देखभाल सेवाओं की एक व्यापक श्रृंखला प्रदान करेगा। ये पहल कैंसर उपचार सुविधाओं को बढ़ाने और रोगी परिणामों को बेहतर बनाने की व्यापक प्रतिबद्धता का हिस्सा हैं। शिलान्यास समारोह चिकित्सा अधीक्षक डॉ. (प्रो.) वंदना तलवार द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम में डॉ भूमिका मिश्रा एसई, सीपीडब्ल्यूडी, सभी एडीडीएल एमएस डॉ जयंती मणि, डॉ कपिल सूरी, डॉ आर पी अरोड़ा, डॉ विकास यादव एचओडी और सर्जिकल ऑन्कोलॉजी, मेडिकल ऑन्कोलॉजी, ईएनटी और पीएमआर के विभागाध्यक्षों सहित प्रमुख अधिकारियों ने भाग लिया।

भारत के प्रमुख सरकारी स्वास्थ्य संस्थानों में से एक, सफदरजंग अस्पताल, सालाना लगभग 2,500 नए कैंसर रोगियों को पूरी तरह से मुफ्त में रेडियोथेरेपी उपचार प्रदान करके कैंसर के इलाज में प्रगति करना जारी रखता है। एक प्रमुख विकास में, अस्पताल विकिरण ऑन्कोलॉजी विभाग में अत्याधुनिक हाई एनर्जी लीनियर एक्सेलेरेटर की स्थापना के साथ अपनी ऑन्कोलॉजी सेवाओं को और बढ़ाने के लिए तैयार है। नई मशीन से कैंसर के इलाज की गुणवत्ता में काफी सुधार होने की उम्मीद है, खासकर वंचित रोगियों के लिए। ये तकनीकें विभिन्न प्रकार के कैंसर के उपचार में अपनी सटीकता और प्रभावशीलता के लिए जानी जाती हैं, जिससे रोगियों को कम से कम दुष्प्रभावों के साथ सफल परिणाम मिलने की अधिक संभावना होती है। हाई एनर्जी लीनियर एक्सेलेरेटर के अलावा, सफदरजंग अस्पताल दो और महत्वपूर्ण उपकरण खरीदने की प्रक्रिया में है: एक लो एनर्जी लीनियर एक्सेलेरेटर और एक सीटी सिम्युलेटर। ये उपकरण विकिरण चिकित्सा की योजना बनाने और उसे वितरित करने के लिए आवश्यक हैं, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि रोगियों को सबसे सटीक और प्रभावी उपचार मिले। सफदरजंग अस्पताल में चल रहे उन्नयन संस्थान को भारत में एक अग्रणी कैंसर उपचार प्रदाता के रूप में स्थापित करने के व्यापक प्रयास का हिस्सा हैं। अस्पताल को नवीनतम तकनीक से लैस करके, सफदरजंग अस्पताल कैंसर के खिलाफ लड़ाई में देश के शीर्ष निजी अस्पतालों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ा होने के लिए तैयार है। ये प्रगति सामाजिक-आर्थिक स्थिति की परवाह किए बिना सभी को विश्व स्तरीय स्वास्थ्य सेवा प्रदान करने के लिए अस्पताल की प्रतिबद्धता को रेखांकित करती है, और भारत में बढ़ते कैंसर के बोझ को दूर करने में सरकारी संस्थानों की महत्वपूर्ण भूमिका को उजागर करती है।

एन एस ई आर डी चेयरमैन कैफ़ आचार्य देव भवः पुरस्कार से सम्मानित

परिवहन विशेष

नई दिल्लीः एन एस इ आर डी चेयरमैन कैफ़ को आचार्य देव भवः पुरस्कार से सम्मानित गया। समारोह में मुख्य अतिथि के रूप मैं बॉलीवुड अभिनेता मुकेश खन्ना (शक्तिमान) व अन्य उपस्तिथ थे।

अवार्ड देते हुए सभी ने एन एस इ आर डी द्वारा किए जा रहे कामों की सराहना की और हौसला अफ़ज़ाई करते हुए सामाजिक कार्यों को जारी रखने की भी अपील की।

इस अवसर एन एस इ आर डी चेयरमैन मोहम्मद कैफ ने कहा कि देश के पहले महानायक द्वारा सामाजिक नायक के रूप में सम्मानित होना वास्तव में गौरव का क्षण है। मुझे इस सम्मान के योग्य समझने के लिए मैं ग्लोबल सोशल इंट्रेस्ट लीग और नेकी की राह संस्था का हृदय से आभारी हूँ और आचार्य देव भवः पुरस्कार 2024 पाकर गौरवान्वित महसूस कर रहा हूँ। मैं उपस्थित सभी गणमान्य व्यक्तियों और अपनी समर्पित टीम का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। यह सम्मान मुझे समाज के कल्याण के लिए और भी अधिक समर्पण के साथ अपना काम जारी रखने के लिए नई ऊर्जा और प्रेरणा देता है।

अवार्ड की ख़बर मिलते ही दोस्तों, समाजी शख्सियात और दूसरे लोग मुबारकबाद दे रहे हैं।

मेरा विचार : युवा हमारे देश का सुनहरा भविष्य....

युवा हमारे देश का भविष्य हैं कल उनके हाथों में देश की बागडोर होगी कोई अच्छा नेता उनमें से देश को मिलेगा कोई सेना प्रमुख हो सकता है अच्छा मार्गदर्शक हो सकता है। अच्छा रक्षक हो सकता है, देश की अंदरूनी व्यवस्था को सम्भालने के लिये अच्छा वकील, जज, डॉक्टर, या पुलिस अधिकारी बनेगा परन्तु देश मे बहोत आसानी से मुहैया होने वाले नशे ने युवा पीढ़ी को गुमराह किया हुआ है। नशे की गिरफ्त में पड़कर अपना जीवन व भविष्य बर्बाद कर चुका है।

युवाओं के पसंदीदा अभिनेता युवाओं के सबसे बड़े दुश्मन हैं जिहोंने फिल्मों में नशीले पदार्थो की तस्करी को व नशीले पदार्थों के सेवन को बढ़ावा दिया है। चंद पैसों के लिये किसी भी नशीले पदार्थ के विज्ञापन को करने के लिये तैयार हो जाते हैं। जो युवा उनको पसंद करते हैं वो भी उनका अनुसरण करते हैं और गांजा, अफीम, गुटका आदि का सेवन करते हैं।

जिससे युवाओं की मनोवृत्ति बहोत ही भयावह होती जा रही है। जैसे आये दिन नशे की हालत में कोई भी वारदात कर देते हैं कोई चाकू चला रहा है तो कोई पिस्तौल सरेआम लेकर घूम रहा है।

जिसका इस्तेमाल कभी भी छोटी छोटी बातों पर करते हैं उनको कोई फर्क नही पड़ता कि उन्होंने किस महिला का सुहाग उजाड़ दिया किस मां का लाल छीन लिया किस बहन की राखी सुनी कर दी क्योंकि उस समय वह नही होता उनके अंदर एक राक्षस होता है। जिसको उनमें जगाने का काम फिल्मों में दिखाई जाने वाली कहानी के किरदार होते हैं।

इन्ही फिल्मों ने हमारी बहु बेटियों को भी कहीं ना कहीं प्रभावित किया है। हमारी संस्कृति में महिलाओं को देवी का रूप कहा जाता है। परन्तु आजकल कुछ महिलाओं में चण्डी नजर आ रही है जो अपने माता पिता की इज्ज़त से खेल रही हैं। माता पिता द्वारा दी गई आजादी का गलत फायदा उठाकर अपनी व माता पिता की इज्ज़त उछाल रही हैं उनको भी केवल स्वयं के अलावा किसी से कोई मतलब नही है। उनका पहनावा बदलता जा रहा जिसके द्वारा बदन ढंकता कम है दिखता ज्यादा है। सूट के स्थान पर पेंट के साथ कुर्ता पहन कर चल देतीं है जबकि दुपट्टा हर लड़की के लिये जरूरी होता है।

कहते हैं फिल्में समाज का आईना दिखाती हैं तो यह गंदगी समाज को क्यू परोस रही हैं क्यों नही वो दिखाये जिससे समाज को सुधारा जा सके युवाओं को देश व समाज के प्रति जिम्मेदार बनाया जाये लड़कियो को देश की संस्कृति में वापस लाया जाये। आजकल विदेशी हमारी संस्कृति अपना रहे हैं और हम विदेसियो की फूहड़ता को अपनाकर अपनी संस्कृति व कल्चर को बर्बाद कर रहे हैं।

आइये हम मिलकर कसम खाये हम अपने घर से शुरुआत करें देश की नींव मजबूत करें अपने युवाओं को नई राह पर चलायें। जिससे हमारा देश मजबूत होगा और हमारी संस्कृति का मान भी बढ़ेगा।

पी ड़ी वर्खिया समाज सेवक
दिल्ली

दिल्ली सरकार ने गणेश चतुर्थी और दशहरा के लिए जारी की गाइडलाइंस, उल्लंघन पर हो सकती है जेल

यमुना में मूर्ति विसर्जन पर अब 50 हजार रुपये का जुर्माना भरना होगा। दिल्ली प्रदूषण नियंत्रण समिति (डीपीसीसी) ने गणेशोत्सव और दुर्गा पूजा के दौरान यमुना में मूर्ति विसर्जन को लेकर गाइडलाइंस जारी की हैं। इन दिशानिर्देशों के अनुसार नेशनल मिशन फॉर क्लीन गंगा (एनएमसीजी) के आदेश के तहत गंगा और उसकी सहायक नदियों में मूर्ति विसर्जन करने पर 50 हजार रुपये का पर्यावरण क्षति शुल्क लगेगा।

नईदिल्ली। गणेशोत्सव और दुर्गा पूजा के दौरान यमुना में मूर्ति विसर्जन करने पर 50 हजार रुपये का जुर्माना भरना पड़ सकता है। दिल्ली प्रदूषण नियंत्रण समिति (डीपीसीसी) ने इसके लिए पहले से तय नियमों के आधार पर फिर से गाइडलाइंस जारी की है।

गाइडलाइंस के मुताबिक नेशनल मिशन फॉर क्लीन गंगा (एनएमसीजी) द्वारा 2019 एवं 2021 में जारी आदेश के अनुसार गंगा और उसकी सहायक नदियों में मूर्ति विसर्जन करने पर 50 हजार रुपये का पर्यावरण क्षति शुल्क लगाया जाएगा। वहीं एनएमसीजी के एन्वॉयरमेंटल प्रोटेक्शन एक्ट 1986 के सेक्शन पांच के अनुसार नदियों को प्रदूषित करने पर एक लाख रुपये जुर्माना, जेल या दोनों की सजा हो सकती है। डीपीसीसी ने मूर्तिकारों और आम लोगों के लिए विसर्जन की गाइडलाइंस जारी की है।

मूर्तिकारों के लिए

मूर्ति बनाने के लिए प्राकृतिक मिट्टी, बायोडिग्रेडेबल मैटीरियल का इस्तेमाल करें

मूर्ति को सजाने के लिए प्राकृतिक रंगों व बायोडिग्रेडेबल मैटीरियल का इस्तेमाल करें

पीओपी की मूर्तियां न बनाएं

आम लोगों और आरडब्ल्यूए के लिए

पीओपी की मूर्ति का विसर्जन जोहड़ों, झीलों, तालाबों व नदियों में न करें

जहां तक संभव हो, मूर्ति विसर्जन टब या बाल्टी में करें

पूजा के सामान जैसे फूल, सजावटी सामान विसर्जन से पहले मूर्ति से हटा लें

विभागों के लिए

सिविक एजेंसियां मूर्ति विसर्जन के लिए अस्थाई तालाबों का इंतजाम करें

एमसीडी और दिल्ली पुलिस गाड़ियों को चैक करें कि कोई मूर्तियों का विसर्जन करने यमुना तक न आए

एमसीडी ऐसे मूर्तिकारों पर एक्शन ले जो बिना लाइसेंस या रजिस्ट्रेशन के मूर्तियां बेच रहे हैं

संबंधित डीएम जुर्माना लगाने के लिए अपने अपने एरिया में टीमें बनाएं

क्यों प्रतिबंधित है यमुना में मूर्ति विसर्जन?

मूर्ति विसर्जन की वजह से यमुना के पानी में कई तरह के केमिकल्स जैसे मर्करी, जिंक आक्साइड, क्रोमियम, लेड, कैडमियम आदि घुल जाते हैं। यह जल में रहने वाले जीवों के लिए काफी नुकसानदेह है। इस तरह के पानी की मछलियां जब व्यक्ति खाते हैं तो उनमें कई तरह की बीमारी का खतरा होता है।

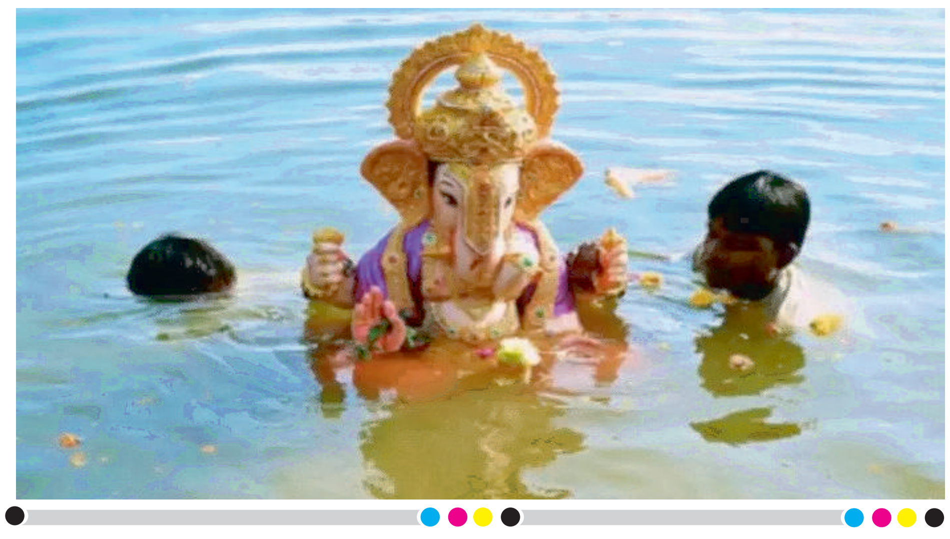

भाजपा ने नए की जगह पुराने नेताओं पर ही क्यों जताया भरोसा? चुनावी रणनीति आई सामने; कांग्रेस के लिए टेंशन

परिवहन विशेष न्यूज

हरियाणा विधानसभा चुनाव के लिए भाजपा ने बुधवार को पहली लिस्ट जारी कर दी। जिसके बाद टिकट कटने वाले मंत्रियों पूर्व मंत्रियों और विधायकों में नाराजगी देखने को मिली। बीजेपी ने पुराने उम्मीदवारों पर ही दांव खेला है। प्रदेश में गुरुग्राम भाजपा का गढ़ माना जाता है। इस लेख के माध्यम से उन कारणों को पढ़िए जिसे देखते हुए पुराने धुरंधरों पर भरोसा जताया गया।

गुरुग्राम। गुरुग्राम। बदली परिस्थितियों में जोखिम मोल लेने की बजाय भाजपा ने पुराने खिलाड़ियों पर भाजपा ने भरोसा जताया है। गुड़गांव विधानसभा क्षेत्र से मुकेश शर्मा पहलवान, बादशाहपुर से पूर्व मंत्री राव नरबीर सिंह एवं सोहना से पूर्व विधायक तेजपाल तंवर को टिकट दिया गया है। तीनों चुनावी राजनीति के धुरंधर खिलाड़ी हैं।

किसे, कहां और कैसे मात देना है, उन्हें पता है। हालांकि अन्य दावेदारों के असंतोष को खत्म करना तीनों के लिए बहुत बड़ी चुनौती है। असंतोष की वजह से चुनाव में भीतरघात की आशंका है। असंतोष की वजह से ही पार्टी को टिकट बंटवारे में काफी समय लग गया।

पार्टी ने एंटी-इनकंबेसी को कम करने का किया प्रयास

पार्टी ने अपने दो वर्तमान विधायकों गुड़गांव से सुधीर सिंगला एवं सोहना से विधायक व प्रदेश सरकार में स्वतंत्र प्रभार के राज्यमंत्री संजय सिंह को बेटिकट कर दिया। इस तरह एंटी-इनकंबेसी फैक्टर को पार्टी ने कम करने का प्रयास किया है।

प्रदेश में गुरुग्राम जिला भाजपा (Haryana BJP) का गढ़ माना जाता है। जिले में चार विधानसभा क्षेत्र गुड़गांव, बादशाहपुर, सोहना एवं पटौदी हैं। गुड़गांव, सोहना एवं पटौदी पर भाजपा का कब्जा है। बादशाहपुर में बहुत कम अंतर से हार हुई थी। पटौदी को छोड़कर तीन सीटों पर भाजपा ने प्रत्याशी की घोषणा कर दी है।

गुड़गांव से विधायक सुधीर सिंगला का टिकट काटकर उनकी जगह मुकेश शर्मा पहलवान को मैदान में उतारा गया है। यह पार्टी की ओर से टिकट के लिए प्रबल दावेदारों में से एक थे। वर्ष 2014 में बादशाहपुर से भी प्रबल दावेदार थे। उस समय पार्टी ने पूर्व मंत्री राव नरबीर सिंह को मैदान में उतारा था।

मोदी लहर के बाद भी पाए थे 40 हजार वोट

मुकेश शर्मा पहलवान निर्दलीय लड़ गए थे। मोदी लहर के बाद भी उन्होंने लगभग 40 हजार वोट प्राप्त किए थे। उसके बाद से गुड़गांव से लड़ने की तैयारी कर रहे थे। लगातार जनसंपर्क अभियान में जुटे थे। स्थानीय सांसद व केंद्रीय मंत्री राव इंद्रजीत सिंह सहित भाजपा के कई वरिष्ठ नेताओं की उनकी नजदीकी है।

लगातार लोगों के बीच रहने का लाभ उन्हें पार्टी ने दिया है। गुड़गांव पर पिछले 10 सालों से भाजपा का कब्जा है। ऐसे में कब्जे को बरकरार रखना उनके लिए बहुत बड़ी चुनौती है क्योंकि गुड़गांव से पार्टी में मजबूत दावेदारों की लंबी फेहरिस्त थी। बादशाहपुर से उम्मीदवार बनाए राव नरबीर सिंह जिले में पार्टी के सबसे बड़े नेता हैं। उन्होंने ही वर्ष 2014 के चुनाव में पहली बार बादशाहपुर से कमल खिलाया था।

मनीष दिवंगत विधायक राकेश दौलताबाद से हारे

वह देश में ताऊ के नाम से ख्यात चौधरी देवीलाल (Chaudhary Devi Lal) से लेकर बंसीलाल की सरकार में भी मंत्री रह चुके हैं। मनोहर लाल की पहली सरकार में अपने कार्यों से उन्होंने जिले में विकास पुरुष की पहचान बनाई। वर्ष 2019 में पार्टी ने उनका टिकट काटकर मनीष यादव को दे दिया था। मनीष को निर्दलीय दिवंगत विधायक राकेश दौलताबाद (Rakesh Daulatabad) ने हरा दिया था।

इस बार राकेश दौलताबाद की पत्नी कुमुदनी राकेश दौलताबाद मैदान में हैं। उन्हें क्षेत्र के लोगों ने महापंचायत कर चुनाव लड़ने के लिए मजबूर किया है। ऐसे में कुमुदनी राकेश दौलताबाद को काफी मजबूत मना जा रहा है। इसे देखते हुए भाजपा इस बार कोई जोखिम मोल लेना नहीं चाहती थी।

सोहना से पूर्व विधायक तेजपाल तंवर को उतारा गया है। मृदुभाषी व मिलनसार स्वभाव के होने की वजह से सबकी पसंद हैं। पार्टी में उनके आलोचकों की संख्या बहुत कम है। उन्हें क्षेत्र से विधायक व प्रदेश सरकार में वन एवं पर्यावरण राज्यमंत्री संजय सिंह का टिकट काटकर कमल खिलाने का जिम्मा सौंपा गया है।

ऐसे में उनके सामने गढ़ पर कब्जा बरकरार रखना काफी बड़ी चुनौती है क्योंकि दावेदारों के असंतोष का भी उन्हें सामना करना पड़ेगा। हालांकि तेजपाल तंवर ने ही वर्ष 2014 में सोहना में पहली बार कमल खिलाया था।

YEIDA तैयार कर रहा प्रस्ताव, शासन दे चुका मंजूरी; जमीन अधिग्रहण की अधिकतम सीमा 5 से बढ़ाकर अब 20 प्रतिशत

शासन से मंजूरी मिलने के बाद यीडा YEIDA ने प्रस्ताव तैयार करना शुरू कर दिया है। यीडा ने तकरीबन 6000 हेक्टेयर जमीन अधिगृहीत करने का फैसला किया था। यह जमीन करीब 40 गांवों की है। वहीं यमुना प्राधिकरण को हुडको से दस हजार करोड़ का ऋण मिलेगा। पढ़िए आखिर यीडा ने क्या-क्या तैयारी शुरू की है?

परिवहन विशेष न्यूज

ग्रेटर नोएडा। YEIDA यमुना प्राधिकरण जमीन अधिग्रहण के लिए जिला प्रशासन को प्रस्ताव भेजेगा। शासन से जिले में जमीन अधिग्रहण की अधिकतम सीमा पांच प्रतिशत से बढ़ाकर 20 प्रतिशत होने के बाद प्राधिकरण ने प्रस्ताव तैयार करना शुरू कर दिया है।

प्राधिकरण करीब छह हजार हेक्टेयर जमीन का अधिग्रहण करेगा। इसे अगले पांच साल के लिए लैंड बैंक के तौर पर उपयोग किया जाएगा। यीडा ने 40 गांव की तकरीबन 6000 हेक्टेयर जमीन अधिगृहीत करने का फैसला किया था, लेकिन जिले में संचित क्षेत्र का अधिकतम पांच प्रतिशत जमीन अधिग्रहण की सीमा पहले ही पूरी होने के कारण यीडा अपने फैसले पर आगे नहीं बढ़ सका।

YEIDA ने प्रस्ताव तैयार करना शुरू किया

जिला प्रशासन की ओर से जिले में महत्वपूर्ण विकास के मद्देनजर शासन को प्रस्ताव भेजकर अधिग्रहण की अधिकतम सीमा को बढ़ाकर 20 प्रतिशत करने का आग्रह किया गया था। शासन इस प्रस्ताव को स्वीकार करते हुए अपनी मंजूरी दे चुका है। यीडा (YEIDA) ने प्रस्ताव तैयार करना शुरू कर दिया है।

प्राधिकरण को हुडको से मिलेगा 10 हजार करोड़ का ऋण

जमीन अधिग्रहण के लिए प्रदेश सरकार ने यीडा (YEIDA) को तीन हजार करोड़ रुपये ब्याज मुक्त ऋण दिया है। यीडा को इसके बराबर राशि अपने संसाधन से जुटानी है। इसके लिए यीडा ने पिछले दिनों आवासीय एवं शहरी विकास निगम के साथ अनुबंध किया है। हुडको से प्राधिकरण को दस हजार करोड़ का ऋण मिलेगा। यह राशि जमीन अधिग्रहण के अलावा प्राधिकरण की अन्य विकास परियोजना के लिए खर्च होगी।

प्राधिकरण सीईओ डॉ. अरुणवीर सिंह का कहना है कि शासन ने जिले में जमीन अधिग्रहण की सीमा को बढ़ा दिया है। यमुना प्राधिकरण को अपनी विकास परियोजना के लिए जमीन अधिग्रहण करने में आसानी होगी। जमीन अधिग्रहण के कुछ प्रस्ताव पूर्व में जिला प्रशासन को भेजे गए थे, कुछ नए प्रस्ताव तैयार किए जा रहे हैं। उन्हें भी जल्द जिला प्रशासन को भेजकर जमीन अधिग्रहण की प्रक्रिया को शुरू कराया जाएगा।

गाजियाबाद में 'पहले आओ-पहले पाओ' स्कीम में धड़ाधड़ बिके 127 फ्लैट, GDA को मिले 30 करोड़ रुपये

गाजियाबाद विकास प्राधिकरण (जीडीए) की पहले आओ-पहले पाओ योजना के तहत 127 फ्लैट बिक चुके हैं जिससे जीडीए को 30 करोड़ रुपये की आय हुई है। मधुबन बापूधाम योजना में सर्वाधिक 42 फ्लैट बिके हैं। हालांकि अभी भी पुरानी विभिन्न योजनाओं में 1500 से अधिक फ्लैट खाली पड़े हैं। प्राधिकरण ने स्वतंत्रता दिवस पर पहले आओ-पहले पाओ स्कीम लॉन्च की है।

गाजियाबाद। करीब एक दशक से गाजियाबाद विकास प्राधिकरण (जीडीए) की विभिन्न योजनाओं के फ्लैट खरीदारों की बाट जोह रहे थे। स्वतंत्रता दिवस पर 'पहले आओ-पहले पाओ' योजना के बाद इनमें 127 फ्लैट की बिक्री हुई है, जिससे जीडीए को 30 करोड़ रुपये की आय हुई है।

अभी खाली पड़े हैं 1500 से अधिक फ्लैट

जीडीए की पांच महत्वपूर्ण योजनाओं के अलग-अलग साइज के 1500 से अधिक फ्लैट खाली पड़े हैं। मंडलायुक्त की अध्यक्षता में मेरठ में आयोजित बोर्ड बैठक में इन योजनाओं के फ्लैट की कीमत वित्तीय वर्ष 2024-25 में भी ज्यों की त्यों रखने का प्रस्ताव पर सहमति बनी।

'पहले आओ-पहले पाओ' योजना के तहत लोगों में खरीदारी को लेकर उत्साह दिखाई दिया। ऑनलाइन के अलावा योजना के तहत फ्लैट खरीदने के लिए लोग प्राधिकरण कार्यालय में पहुंच रहे हैं। अभी तक जीडीए करीब 127 फ्लैट बेच चुका है, जिससे जीडीए को 30 करोड़ रुपये की आय हुई है।

मधुबन बापूधाम योजना में बिके सर्वाधिक फ्लैट

सर्वाधिक फ्लैट मधुबन बापूधाम योजना के 42 फ्लैट बेचकर 10 करोड़, मोदीनगर के संजयपुरी योजना के सभी 48 फ्लैट की बिक्री से तीन करोड़ रुपये, चन्द्रशिला अपार्टमेंट नेहरूनगर योजना के सभी 28 फ्लैट की बिक्री से 14 करोड़ रुपये और इन्द्रप्रस्थ योजना के नौ फ्लैट से 2.50 करोड़ रुपये की आय हुई है।

जीडीए अपर सचिव प्रदीप कुमार ने बताया कि योजना के तहत लोगों में काफी उत्साह है। आने वाले दिनों में लोग अधिक संख्या में इसका लाभ लेंगे।

स्किल्स और विशेषज्ञता के साथ अच्छा इंसान बनना सिखाता है 'शिक्षक'

डॉ. पवन सिंह मलिक

शिक्षक जो जीवन के व्यावहारिक विषयों को बोल कर नहीं बल्कि स्वयं के उदाहरण से वैसा करके सिखाता है। शिक्षक जो बनना नहीं गढ़ना सिखाता है। शिक्षक जो केवल शिक्षा नहीं बल्कि विद्या सिखाता है। शिक्षक केवल सफ़ल होना नहीं, असफ़लता से भी रास्ता निकाल लेना सिखाता है।

आज शिक्षक दिवस है और हममें से कोई भी ऐसा नहीं, जिसके जीवन में इस शब्द का महत्व न हो। हम आज जो कुछ भी है या हमने जो कुछ भी सिखा या जाना है उसके पीछे किसी न किसी का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष सहयोग व उसे सिखाने की भूमिका रही है। इसलिए आज का दिन प्रत्येक उस व्यक्तित्व के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने का व उन सीखे हुए मूल्यों के आधार पर खुशहाल समाज निर्माण में अपनी भूमिका तय करने का दिन भी है। शिक्षक यानि गुरु शब्द का तो अर्थ ही अंधकार (अज्ञान) से प्रकाश (ज्ञान) की ओर ले जाने वाला है। भारत में नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का श्री गणेश भी हो चुका है। पूरी शिक्षा नीति को देखने पर ध्यान आता है कि उसके क्रियान्वयन व सफ़ल तरीके से उसे मूर्त रुप देने का अगर सीधा-सीधा किसी का नैतिक दायित्व बनता है तो वह शिक्षक का ही है। वर्तमान के आधार को मजबूत करते हुए, भविष्य के आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना को चरितार्थ करने व भारत को आगे बढ़ाने के सपनों को अपनी आँखों में भर कर निरंतर आगे बढ़ते रहने की प्रेरणा व भाव जागरण का आधार भी शिक्षक है।

जीवन का दायित्वबोध है शिक्षक:-

शिक्षक जो जीवन के व्यावहारिक विषयों को बोल कर नहीं बल्कि स्वयं के उदाहरण से वैसा करके सिखाता है। शिक्षक जो बनना नहीं गढ़ना सिखाता है। शिक्षक जो केवल शिक्षा नहीं बल्कि विद्या सिखाता है। शिक्षक केवल सफ़ल होना नहीं, असफ़लता से भी रास्ता निकाल लेना सिखाता है। शिक्षक जो तर्क व कुतर्क के अंतर को समझाता है। शिक्षक जो केवल चलना नहीं, गिरकर उठना भी सिखाता है। शिक्षक जो भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार होना सिखाता है। शिक्षक जिसे समाज संस्कार, नम्रता, सहानुभूति व सहानुभूति की चलती फिरती पाठशाला मानता है। कहा जाता है कि एक शिक्षक का दिमाग देश में सबसे बेहतर होता है। एक बार सर्वपल्ली राधाकृष्णन के कुछ छात्रों और दोस्तों ने उनका जन्मदिवस मनाने की इच्छा ज़ाहिर कि, इसके जवाब में डॉक्टर राधाकृष्णन ने कहा कि मेरा जन्मदिन अलग से मनाने की बजाय इसे शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाए तो मुझे बहुत गर्व होगा। इसके बाद से ही पूरे भारत में 5 सितंबर का दिन शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस दिन इस महान शिक्षाविद को हम सब याद करते हैं।

एक नज़र डॉ. राधाकृष्णन सर्वपल्ली:-

डॉ. राधाकृष्णन ने 12 साल की उम्र में ही बाइबिल और स्वामी विवेकानंद के दर्शन का अध्ययन कर लिया था। उन्होंने दर्शन शास्त्र से एम.ए. किया और 1916 में मद्रास रेजीडेंसी कॉलेज में सहायक अध्यापक के तौर पर उनकी नियुक्ति हुई। उन्होंने 40 वर्षों तक शिक्षक के रूप में काम किया। वह 1931 से 1936 तक आंध्र विश्वविद्यालय के कुलपति रहे। इसके बाद 1936 से 1952 तक ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में प्राध्यापक के पद पर रहे और 1939 से 1948 तक वह काशी हिंदू विश्वविद्यालय के कुलपति पद पर आसीन रहे। उन्होंने भारतीय संस्कृति का गहन अध्ययन किया। साल 1952 में उन्हें भारत का प्रथम उपराष्ट्रपति बनाया गया और भारत के द्वितीय राष्ट्रपति बनने से पहले 1953 से 1962 तक वह दिल्ली विश्वविद्यालय के कुलपति रहे। इसी बीच 1954 में भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने उन्हें 'भारत रत्न' की उपाधि से सम्मानित किया। डॉ. राधाकृष्णन को ब्रिटिश शासनकाल में 'सर' की उपाधि भी दी गई थी। इसके अलावा 1961 में इन्हें जर्मनी के पुस्तक प्रकाशन द्वारा 'विश्व शांति पुरस्कार' से भी सम्मानित किया गया था। अतः: हम कह सकते है कि वे जीवन भर अपने आप को शिक्षक मानते रहे और उन्होंने अपना जन्मदिन भी इसी परिपाटी का पालन करने वाले शिक्षकों के लिए समर्पित कर दिया।

शिक्षा को मिशन का रूप देना होगा:-

डॉ. राधाकृष्णन अक्सर कहा करते थे, शिक्षा का मतलब सिर्फ जानकारी देना ही नहीं है। जानकारी का अपना महत्व है लेकिन बौद्धिक झुकाव और लोकतांत्रिक भावना का भी महत्व है, क्योंकि इन भावनाओं के साथ छात्र उत्तरदायी नागरिक बनते हैं। वे मानते थे कि जब तक शिक्षक शिक्षा के प्रति समर्पित और प्रतिबद्ध नहीं होगा, तब तक शिक्षा को मिशन का रूप नहीं मिल पाएगा। आज शिक्षा को मिशन बनाना होगा। शिक्षा की पहुँच इस देश के अंतिम घर के अंतिम व्यक्ति तक होनी चाहिए। इसके लिए केवल शिक्षकों को ही नहीं समाज को भी अपनी भूमिका निभानी होगी। प्रत्येक वो व्यक्ति जो अपने आपको शिक्षा देने में सक्षम समझता है उसे आगे आना होगा। अपने यहाँ अधिक से अधिक मोहल्ले एवं ग्रामीण शिक्षा केंद्र संचालित करने की चुनौती को उसे स्वीकार करना होगा। ताकि समाज का कोई भी वर्ग या स्थान शिक्षा से वंचित न रहे। उसे प्रतिदिन या सप्ताह में कुछ समय शिक्षा जैसे पुनीत कार्य के लिए लगाना होगा। इस कार्य के लिए उसे अपने जैसे बहुत से लोगों को खड़ा करना होगा व इस अभियान में सहयोगी बनने के लिए उनका भाव जागृत करना होगा।

शिक्षा स्वरोजगार के लिए:-

शिक्षक के नाते अब हमें शिक्षा को क्लास रूम से बाहर ले जाने की पहल करनी होगी यानि उसकी व्यावहारिकता पर ज्यादा ध्यान देना होगा। विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास को अपनी प्राथमिकता में लाना होगा। ताकि विद्यार्थी का कौशल उसके जीवन का हिस्सा बन सके और आगे उसे रोज़गार से जोड़ा जा सके। शिक्षा को फ़ॉर्मल एजुकेशन के साथ – साथ अनौपचारिक यानी इन-फ़ॉर्मल एजुकेशन बनाने की ओर भी अब हमें अपने प्रयासों को अधिक गति से बढ़ाने की आवश्यकता है। कोविड ने हमें आज इस विषय की ओर देखने की दृष्टि भी दी है ताकि भविष्य में किसी विकट परिस्थिति व आर्थिक संकट के समय स्व-रोज़गार के आधार पर हम आत्मनिर्भरता की भावना के साथ उस परिस्थिति का सामना कर सके।

सच्ची अभिव्यक्ति व प्रेरक शक्ति का दिन:-

तो आईये, आज शिक्षक दिवस के दिन इन सभी बातों का पुनः स्मरण कर, अपने हौंसलों की उड़ान को ओर बढ़ाते है। शिक्षक के दायित्वबोध को और अधिक संकल्प के साथ निभाते है। डॉ. राधाकृष्णन सर्वपल्ली के जीवन के विभिन्न प्रेरक पहलुओं से सीख ले, प्रत्येक व्यक्ति तक शिक्षा को ले जाने के अपने प्रयास को गति देते है। मैं से प्रारंभ कर इस शिक्षा रुपी अलख को लाखों – लाखों का सपना बनाते हैं। वास्तव में शिक्षक होने के नाते आज शिक्षक दिवस के दिन डॉ. राधाकृष्णन सर्वपल्ली के प्रति व अपने आदर्श प्रेरणादायी शिक्षकों के प्रति यही हमारी सच्ची अभिव्यक्ति व प्रेरक शक्ति होगी।

-:सौजन्य:-
ईवी ड्राइव द फ्यूचर
EV
Drive the Future

चालीस हजार ई-रिक्शा शहर के यातायात पर लगा रहे 'ब्रेक'

परिवहन विशेष न्यूज

प्रयागराज में ई-रिक्शा की संख्या लगातार बढ़ रही है। घनी आबादी वाला इलाका हो या चौक-चौराहा, गली-मोहल्ला हो या बाजार सभी जगह ई-रिक्शा चालक अपनी मनमानी कर रहे हैं। नाबालिग और अप्रशिक्षित ई-रिक्शा चलाने वाले बेलगाम होकर फर्राटा भर रहे हैं। इससे राहगीर चोटिल होते हैं। कई बार बड़ी दुर्घटनाएं भी हो जाती हैं। रास्ते में अचानक रोककर सवारी बैठाने लगते हैं, साथ ही बेतरतीब ढंग से ई-रिक्शा खड़ा करते हैं। ऐसे में यातायात भी प्रभावित होता है।

इन पर लगाम लगाने के उद्देश्य से आरटीओ और यातायात पुलिस के अधिकारी बैठक तक ही सीमित हैं। कार्ययोजना तो बनाई जाती है पर इसका अनुपालन न होने से ई-रिक्शा चालकों की मनमानी चरम पर है। इनके रंग के आधार पर रूट निर्धारित करने, किराया चार्ट बनाने को लेकर कई बार चर्चा की गई पर लागू नहीं कराया जा सका। आरटीओ कार्यालय से मिली जानकारी के अनुसार 22 हजार ई-रिक्शा पंजीकृत हैं, जबकि टेंपो टैक्सी यूनियन के पदाधिकारियों की माने तो शहर में कुल 40 हजार ई-रिक्शा सड़कों पर दौड़ रहे हैं। अब सवाल यह है कि हजारों ई-रिक्शा बिना रजिस्ट्रेशन के कैसे दौड़ रहे हैं।

आरटीओ में 22 हजार ई-रिक्शा पंजीकृत हैं। अभियान चलाकर इन पर नियमित कार्रवाई भी की जाती है, जिनके रजिस्ट्रेशन नहीं होते, उन्हे सीज किया जाता है। - राजीव चतुर्वेदी, एआरटीओ प्रशासन

नखासकोहना, कीडगंज, अलोपीबाग, ट्रांसपोर्ट नगर, रामबाग, मुंडेरा, बैरहना, राजापुर, तेलियरगंज में बनी दुकानों में ई-रिक्शा चार्ज किए जा रहे हैं, साथ ही बड़ी संख्या में घरेलू कनेक्शन पर भी लोग अपने ई-रिक्शा चार्ज कर रहे हैं, लेकिन हैरत की बात यह है कि बिजली विभाग के जिम्मेदारों को इसकी भनक तक नहीं लग रही।

ईवी विनिर्माताओं को सब्सिडी की जरूरत नहीं : नितिन गडकरी

परिवहन विशेष न्यूज

केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने इलेक्ट्रिक वाहन विनिर्माताओं को सब्सिडी जारी रखने की जरूरत से इनकार करते हुए गुरुवार, 05 सितंबर को कहा कि अब लोग खुद ईवी या सीएनजी वाहनों को पसंद कर रहे हैं।

गडकरी ने कहा कि पहले इलेक्ट्रिक वाहनों के विनिर्माण की लागत बहुत अधिक थी, लेकिन अब मांग बढ़ चुकी है और इसकी उत्पादन लागत भी घट गई है। ऐसी स्थिति में ईवी को सब्सिडी देने की जरूरत नहीं रह गई है।

ब्लूमबर्ग एनईएफ शिखर सम्मेलन में बोलते हुए गडकरी ने कहा, "मुझे लगता है कि इलेक्ट्रिक वाहनों के निर्माण को अब सरकारी सब्सिडी की आवश्यकता नहीं है।" उन्होंने बताया कि प्रारंभिक लागत अधिक थी, लेकिन मांग बढ़ने के साथ-साथ उत्पादन लागत कम हुई है, जिससे आगे की सब्सिडी अनावश्यक

हो गई है। गडकरी ने यह भी बताया कि इलेक्ट्रिक वाहनों को पहले से ही फेवरेबल टैक्सेशन का लाभ मिल रहा है, जिसमें ईवी पर जीएसटी केवल 5% है, जो पेट्रोल और डीजल वाहनों की तुलना में एक महत्वपूर्ण लाभ प्रदान करता है। उन्होंने कहा, "सब्सिडी की मांग अब उचित नहीं है."

उन्होंने कहा कि इलेक्ट्रिक वाहनों पर लगने वाला जीएसटी पेट्रोल और डीजल वाहनों की तुलना में कम है। फिलहाल हाइब्रिड एवं पेट्रोल-डीजल इंजन वाले वाहनों पर 28 प्रतिशत जीएसटी लगता है जबकि इलेक्ट्रिक वाहनों पर सिर्फ पांच प्रतिशत जीएसटी लगता है।

गडकरी ने स्वच्छ ऊर्जा की ओर व्यापक बदलाव की चर्चा करते हुए कहा कि भारत की पेट्रोल-डीजल पर निर्भरता एक प्रमुख चिंता का विषय है। हालांकि, उन्होंने पेट्रोल और डीजल वाहनों पर अतिरिक्त टैक्स लगाने की संभावना को खारिज कर दिया और सार्वजनिक परिवहन में ईवी के विस्तार पर जोर दिया। उन्होंने कहा, "इलेक्ट्रिक बसें पेट्रोल-डीजल की निर्भरता और प्रदूषण स्तर को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं।"

इलेक्ट्रिक वाहन को खुद चुन रहे ग्राहक, अब सब्सिडी की जरुरत नहीं, केंद्रीय मंत्री नितिन गड़करी ने दिया बयान

नई दिल्ली। केंद्रीय सड़क परिवहन मंत्री नितिन गड़करी ने इलेक्ट्रिक वाहनों के लिए दी जाने वाली सब्सिडी पर बड़ा बयान दिया है। केंद्रीय मंत्री की ओर से क्या कहा गया है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

सब्सिडी की नहीं है जरुरत

केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गड़करी ने कहा है कि इलेक्ट्रिक वाहनों के लिए दी जाने वाली सब्सिडी की अब जरुरत नहीं है। क्योंकि उपभोक्ता अब खुद ही ईवी या सीएनजी वाहन चुन रहे हैं।

कहां दिया बयान

बीएनईएफ शिखर सम्मेलन को संबोधित करते हुए गडकरी ने कहा कि शुरुआत में इलेक्ट्रिक वाहनों के निर्माण की लागत अधिक थी, लेकिन जैसे-जैसे मांग बढ़ी, उत्पादन लागत कम होती गई, जिससे आगे सब्सिडी की जरूरत नहीं रह गई। सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री ने कहा, ₹उपभोक्ता अब खुद ही इलेक्ट्रिक और संपीड़ित प्राकृतिक गैस (सीएनजी) वाहन चुन रहे हैं और मुझे नहीं लगता कि हमें इलेक्ट्रिक वाहनों के लिए ज्यादा सब्सिडी देने की जरूरत है।₹

लगती है 5 फीसदी जीएसटी

मौजूदा समय में हाइब्रिड सहित आंतरिक दहन इंजन से चलने वाले वाहनों पर 28 प्रतिशत जीएसटी लगाई जाती है, और इलेक्ट्रिक वाहनों पर 5 प्रतिशत जीएसटी लगाई जाती है।

भारी उद्योग मंत्री ने दिया था बयान

नितिन गडकरी से पहले केंद्रीय भारी उद्योग मंत्री एचडी कुमारस्वामी ने बुधवार को सब्सिडी पर बयान दिया था। उन्होंने कहा था कि सरकार को एक या दो महीने में अपनी प्रमुख इलेक्ट्रिक मोबिलिटी अपनाने की योजना FAME के तीसरे चरण को अंतिम रूप देने की उम्मीद है। केंद्रीय भारी उद्योग मंत्री एच डी कुमारस्वामी ने कहा था कि एक अंतर-मंत्रालयी समूह योजना के लिए प्राप्त इनपुट पर काम कर रहा है, और फास्टर एडॉप्शन एंड मैन्युफैक्चरिंग ऑफ (हाइब्रिड और) इलेक्ट्रिक व्हीकल (FAME) योजना के पहले दो चरणों में मुद्दों को हल करने का प्रयास किया जा रहा है।

हरदोई में बिना रूट चल रहे 30 ई-रिक्शा सीज

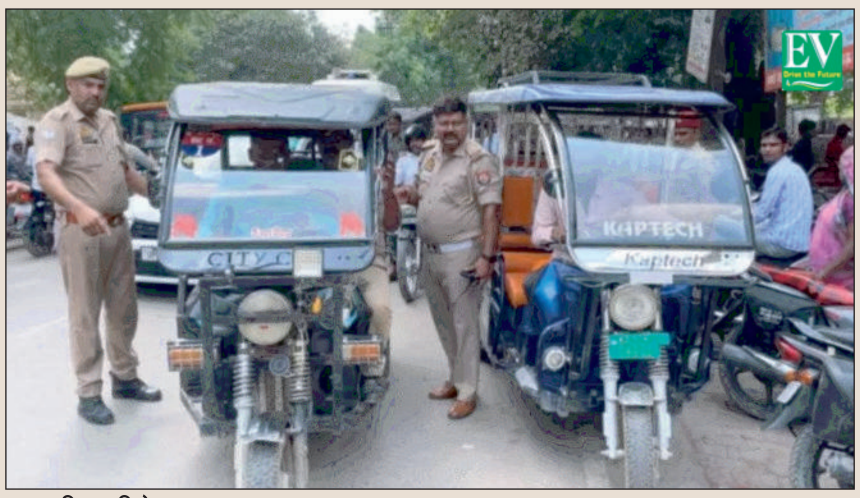

परिवहन विशेष न्यूज

हरदोई में जहां अतिक्रमण हटाओ अभियान चलाया जा रहा है वहीं शहर में जाम का पर्याय बन चुके ई-रिक्शा पर भी अब कार्यवाही शुरू हो गई है। पुलिस प्रशासन द्वारा यातायात को सुचारू रूप से संचालित करने के लिए ईं-रिक्शों पर नंबर अंकित किए थे और ईं-रिक्शों के रूट भी निर्धारित किए थे। शहर में ई-रिक्शों को अपने निर्धारित रूट पर संचालन के निर्देश दिए गए थे, परंतु लगातार ई-रिक्शा चालक अपने मनमानी के चलते शहर भर में आवागमन कर रहे थे, लेकिन अब ऐसा नहीं हो पाएगा।

ई-रिक्शा का जो रूट निर्धारित है अब वह ई-रिक्शा उसी रूट पर ही संचालित होगा उसके लिए यातायात पुलिस द्वारा अब कार्यवाही भी शुरू कर दी गई है। कार्यवाही में यातायात पुलिस ने बिना निर्धारित रूट के संचालन हो रहे। 30 ई-रिक्शाओं को सीज कर दिया है। साथ ही 15 दो पहिया और चौपाइयां वाहनों के भी चालान किए गए हैं जो यातायात नियमों की अनदेखी कर वाहनों को संचालित कर रहे थे। हरदोई पुलिस अधीक्षक के निर्देश के बाद जनपद में अभियान की शुरुआत हो चुकी है।

हरदोई शहर में जाम का कारण बन रहे ई-रिक्शा चालक पर अब यातायात पुलिस ने कार्यवाही का मन बना लिया है। यातायात पुलिस द्वारा कुछ दिन पूर्व सभी ई-रिक्शों के रूट निर्धारित किए गए थे साथ ही ई-रिक्शा चालकों को निर्धारित रूट पर ई-रिक्शा के संचालन को लेकर निर्देशित किया गया था, लेकिन ई-रिक्शा यातायात पुलिसों के निर्देश का पालन नहीं कर रहें थे। यातायात प्रभारी निरीक्षक प्रमोद यादव ने विशेष अभियान चलाते हुए दूसरे मार्ग पर चल रहे ई-रिक्शों पर कार्यवाही की है।

यातायात प्रभारी निरीक्षक ने 30 ई-रिक्शों को सीज किया जबकि चेकिंग के दौरान कई दो पहिया और चौपहिया भी यातायात नियमों का पालन नहीं कर रहे थे जिन पर जुर्माना लगाने की कार्यवाही की गई है। यातायात प्रभारी निरीक्षक प्रमोद यादव ने बताया कि ई-रिक्शाओं के रूट निर्धारित किए गए हैं। यदि कोई भी ई-रिक्शा अपने निर्धारित रूट से हटकर चलता पाया जाता है तो उसके खिलाफ सख्त कार्यवाही की जाएगी। शहर में जाम से निजात दिलाने की यह एक पहल है।

अब कोडिंग प्लान से होगा सीतापुर में ई-रिक्शा का संचालन

परिवहन विशेष न्यूज

सीतापुर में 19 हजार ई-रिक्शों का अब तक पंजीकरण हुआ है। बुधवार, 04 सितंबर को शहर में ई-रिक्शों के संचालन व यातायात व्यवस्था को बेहतर करने के लिए कोडिंग प्लान तैयार किया गया है, जिसके तहत बेतरतीब संचालन और जाम की समस्या से निजात मिल सकेगी।

यातायात निरीक्षक फरीद अहमद व एआरटीओ माला बाजपेयी ने ई-रिक्शा चालकों संग बैठक की है। तय हुआ कि शहर में छह श्रेणियों में बांटकर ई-रिक्शा का संचालन कराया जाएगा। जिसे जल्द ही लागू कर दिया जाएगा।

इसके लिए एक रूट पर 500 ई-रिक्शों की कोडिंग विभाग करेगा। कोडिंग अंग्रेजी वर्णमाला के अक्षरों के हिसाब से की जाएगी। हालांकि यह प्लान एक साल पहले भी बनाया गया था। जिसमें एक रूट पर सिर्फ 100 ई-रिक्शों को रखा गया था। इस बार इसको अपग्रेड किया गया है।

प्लान के तहत ई-रिक्शों को ए से लेकर एफ तक कुल छह श्रेणियों में विभाजित किया गया है। शहर में छह अलग-अलग रूट बनाए गए हैं। सभी रिक्शों पर श्रेणी का साइन अक्षर लगवाया गया है, जिससे लोग अपने रूट के ई-रिक्शे की पहचान कर सकें। सोमवार से शनिवार तक रोस्टर के अनुसार ई-रिक्शों का संचालन होगा यानी जो ई-रिक्शा सोमवार को रोडवेज से लालबाग चुंगी तक चलेंगे। वह मंगलवार को रोडवेज से वैदेही वाटिका तक सवारियां ढो सकेंगे।

रूट का यह चक्र एंटी क्लॉक वाइज चलेगा। मान लीजिए कि ए श्रेणी का ई-रिक्शा सोमवार को रोडवेज से लालबाग तक चला तो, मंगलवार को इस रूट पर बी श्रेणी के नहीं बल्कि एफ श्रेणी के ई रिक्शे चलेंगे।

ई-रिक्शे के लिए रूट निर्धारित

सोमवार - रोडवेज से लालबाग चुंगी (ए)

मंगलवार- रोडवेज से वैदेही वाटिका (बी)

बुधवार - रोडवेज से आंख अस्पताल (सी)

गुरुवार - रोडवेज से नैपालापुर (डी)

शुक्रवार - चुंगी से कांशीराम कॉलोनी (ई)

शनिवार - चुंगी से श्यामनाथ (एफ)

रविवार - सभी रूट फ्री रहेंगे

ई-रिक्शा संचालकों संग बैठक कर उनको कोडिंग प्लान की जानकारी दी गई है। कोई अन्य श्रेणी का ई-रिक्शा निर्धारित रूट से अलग चलता मिलेगा तो उसकी निगरानी यातायात पुलिस करेगी। निर्धारित रूट के अलावा यदि कोई ई-रिक्शा अनाधिकृत रूट पर चलता पाया गया तो उसका चालान किया जाएगा। - फरीद अहमद, यातायात निरीक्षक, सीतापुर।

जयपुर के हर इलाके में अलग-अलग रंग के चलेंगे ई-रिक्शा

जयपुर शहर में अब ई-रिक्शा की व्यवस्था बदलने जा रही है। इसको लेकर जिला कलेक्टर प्रकाश राजपुरोहित ने अधिसूचना जारी कर दी है। जयपुर में अब जोन के अनुसार अलग-अलग कलर के ई-रिक्शा संचालित होंगे। इनकी संख्या और कलर कोड तय कर दिया गया है। अब रंग देखकर पहचान पाएंगे कि रिक्शा किस इलाके का है। ये ई-रिक्शा पुलिस थाना सीमा के मुताबिक संचालित होंगे। अब ई-रिक्शे के कलर से इलाके को भी पहचान पाएंगे।

जिला कलेक्टर प्रकाश राजपुरोहित की ओर से जारी की गई अधिसूचना के मुताबिक अब ई-रिक्शा संबंधित जोन के थाना क्षेत्र में ही संचालित हो सकेंगे। इसके तहत जोन एक में जयपुर उत्तर डीसीपी कार्यालय के 9 थाना इलाके शामिल होंगे। इस इलाके में चलने वाले ई-रिक्शा का कलर कोड गुलाबी होगा। यहां 8500 ई-रिक्शा चलेंगे। जोन 2 में जयपुर पूर्व डीसीपी कार्यालय क्षेत्र के 13 पुलिस थाने शामिल होंगे। इन रंग हल्का हरा होगा। इनकी संख्या 7500 होगी।

जयपुर सेंट्रल के जोन 3 में 12 थाना इलाके शामिल हैं। इनमें भी 7500 ई-रिक्शा चलेंगे। इनका रंग आसमानी होगा। जयपुर दक्षिण डीसीपी के जोन 4 में 7 थाना इलाके शामिल हैं। इनमें 8500 ई-रिक्शा चलेंगे। इन ई-रिक्शा का कलर कोड केसरिया होगा। जयपुर पश्चिम डीसीपी के जोन 5 में 11 पुलिस थाने शामिल हैं। वहां 7500 ई-रिक्शा चलेंगे। उनका कलर कोड हल्का पीला होगा। जबकि जयपुर मेट्रो के स्टेशनों के क्षेत्र में सफेद कलर के 500 ई-रिक्शा चलेंगे।

जयपुर में वर्तमान में ई-रिक्शा पब्लिक ट्रांसपोर्टेशन का बड़ा साधन है और बीते कुछ बरसों से ई-रिक्शा का चलन बढ़ा है। ये वायु और ध्वनी प्रदूषण कम करते हैं। वहीं इनका किराया भी बेहद कम है। लोग ई-रिक्शा का उपयोग ज्यादा करते हैं। लेकिन ई-रिक्शा की बढ़ती भीड़ के कारण फैल रही अव्यवस्था और उनकी आवश्यक निगरानी के मद्देनजर ये कदम उठाया गया है।

मर्सिडीज बेंज ने लॉन्च की EQS 680 इलेक्ट्रिक मेबैक, कीमत 2.25 करोड़ रुपये

परिवहन विशेष न्यूज

जर्मनी की लग्जरी वाहन निर्माता Mercedes Benz ने भारतीय बाजार में नई इलेक्ट्रिक एसयूवी के तौर पर EQS 650 Maybach को लॉन्च कर दिया है। इस इलेक्ट्रिक एसयूवी में किस तरह के फीचर्स को दिया गया है। इसमें कितनी दमदार बैटरी और मोटर को दिया गया है। किस कीमत पर कंपनी की ओर से इसे लॉन्च किया गया है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। लग्जरी वाहन निर्माता Mercedes Benz की ओर से भारतीय बाजार में कई बेहतरीन कारों और एसयूवी को बिक्री के लिए उपलब्ध करवाया जाता है। कंपनी की ओर से पांच सितंबर को पहली इलेक्ट्रिक Maybach के तौर पर EQS 680 को लॉन्च कर दिया है। इसमें किस तरह के फीचर्स को दिया गया है। सिंगल चार्ज में इसकी रेंज कितनी होगी और इसे किस कीमत पर लाया गया है। हम आपको इस खबर में बता रहे हैं।

लॉन्च हुई Mercedes EQS 680 Maybach

मर्सिडीज की ओर से देश में पहली इलेक्ट्रिक मेबैक एसयूवी EQS680 को लॉन्च कर दिया गया है। कंपनी की यह गाड़ी कई बेहतरीन फीचर्स के साथ लाई गई है साथ में इसकी रेंज भी 600 किलोमीटर से ज्यादा दी गई है। इस एसयूवी को पिछले साल अप्रैल में ग्लोबल स्तर पर पेश किया गया था।

कैसे हैं फीचर

नई Mercedes Benz EQS 680 Maybach में कई बेहतरीन फीचर्स को दिया गया है। इसमें कनेक्टिड एलईडी हेडलाइट और टेललैंप दिग गए हैं। साथ ही एंबिएंट लाइट्स, 15 स्पीकर का बर्मेस्टर 4डी सराउंड साउंड सिस्टम, लैदर सीट्स, इंफोटेनमेंट कंट्रोल्स, पावर्ड कर्टेन, रियर सीट पर स्क्रीन, 360 डिग्री कैमरा, जेस्टर कंट्रोल फीचर, चारों सीटों के लिए हीटेड और वेंटिलेटिड सीट्स, 21 इंच अलॉय व्हील्स, दो पैनोरमिक सनरूफ, 11 एयरबैग्स, Level-2 ADAS, एबीएस, ईबीडी, ट्रैक्शन कंट्रोल, ड्राइविंग के लिए ईको, स्पोर्ट्स मेबैक और ऑफ रोड मोड्स जैसे फीचर्स दिए गए हैं।

कितनी दमदार बैटरी और पावर

EQS 680 Maybach में 107.8 kWh की क्षमता की बैटरी दी गई है जिसके साथ ड्यूल इलेक्ट्रिक मोटर मिलती हैं। इसमें लगी मोटर से इसे 658 बीएचपी की पावर और 950 न्यूटन मीटर का टॉर्क मिलता है। इसे सिंगल चार्ज में 611 किलोमीटर तक चलाया जा सकता है और 0-100 किलोमीटर की स्पीड हासिल करने में 4.4 सेकेंड का समय लगता है। 220kW फास्ट चार्जर से इसे 31 मिनट में 10 से 80 फीसदी तक चार्ज किया जा सकता है।

कितनी है कीमत

मर्सिडीज की ओर से इस इलेक्ट्रिक मेबैक को भारत में 2.25 करोड़ रुपये की एक्स शोरूम कीमत पर लॉन्च किया गया है।

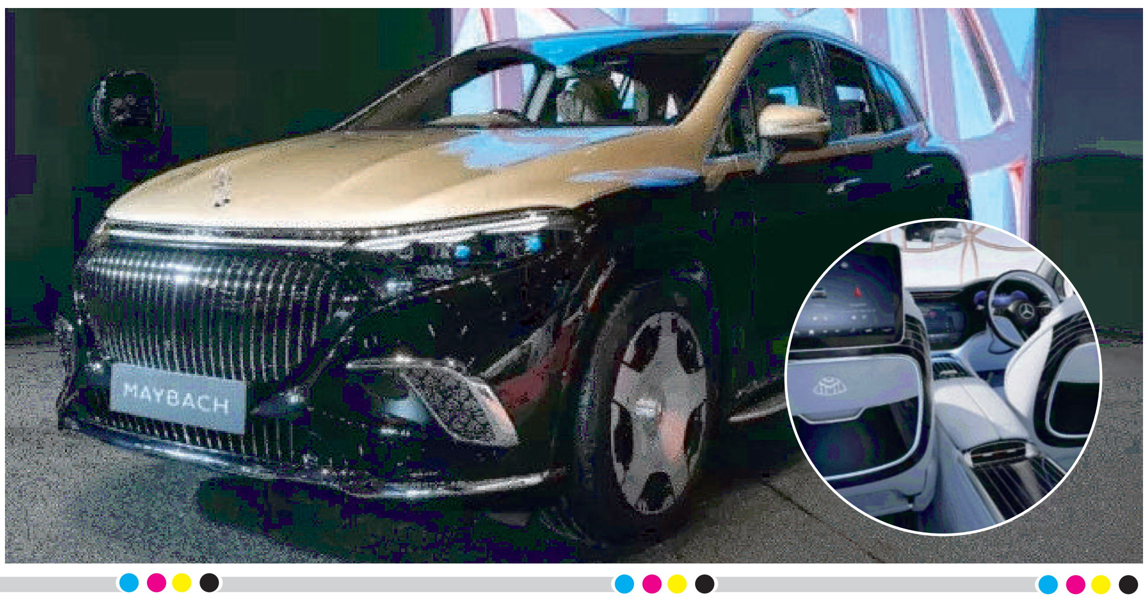

एक संपूर्ण मार्गदर्शिका एक प्रभावी विज्ञापन कैसे लिखें

विजय गर्ग

ब्रांड की ज़रूरतों को समझने के बाद, आप एक बेहतरीन विज्ञापन बना सकते हैं जो ब्रांड और उसकी पेशकशों की ओर ध्यान आकर्षित करता है। इससे ग्राहकों की रुचि बढ़ती है और वे किसी सेवा का लाभ उठाने या उत्पाद खरीदने के इच्छुक हो सकते हैं। विज्ञापन किसी भी उद्योग में किसी भी व्यवसाय में बिक्री उत्पन्न करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। एक प्रभावशाली विज्ञापन कैसे लिखें? निम्नलिखित चरण और युक्तियाँ आपको एक प्रभावी विज्ञापन लिखना सिखा सकती हैं....

विज्ञापन अधिकांश कंपनियों के लिए एक प्रमुख व्यावसायिक रणनीति है। प्रभावी विज्ञापन के लिए अक्सर छवियों और वीडियो के साथ विचारशील और प्रेरक लेखन की आवश्यकता होती है। विज्ञापन और मार्केटिंग के लिए विशेष रूप से लिखने का तरीका जानने से आपके करियर विकास और आपके संगठन को लाभ हो सकता है। इस लेख में, हम चर्चा करते हैं कि किसी ब्रांड, उत्पाद या सेवा के लिए एक प्रभावी विज्ञापन कैसे लिखा जाए, और पढ़ें कि विज्ञापन लेखन में क्या शामिल है और यह क्यों महत्वपूर्ण है। चाबी छीनना: प्रभावी विज्ञापन लेखन संभावित ग्राहकों को लक्षित संदेश, सम्मोहक सुर्खियों और उनकी समस्याओं के समाधान के माध्यम से जोड़ता है। मुख्य रणनीतियों में प्रासंगिक कीवर्ड के साथ एसईओ के लिए अनुकूलन, संक्षिप्त भाषा बनाए रखना और बेहतर जुड़ाव के लिए दृश्य तत्वों का उपयोग करना शामिल है। जानकारी के अधिक जुड़ाव और सत्यापन के लिए अपनी कंपनी की वेबसाइट से लिंक करके, स्प्लिट या ए/बी परीक्षण का उपयोग करके विज्ञापन प्रभावशीलता का मूल्यांकन करें विज्ञापन लेखन क्या है? विज्ञापन लेखन लेखन की एक शैली है जो संभावित ग्राहकों को शामिल करने के लिए अनुनय और अन्य शैलीगत रणनीति का उपयोग करती है, खासकर व्यवसाय में। विज्ञापन लेखन किसी फोटो या वीडियो के लिए टैगलाइन जितना छोटा हो सकता है, या ग्राहकों के पढ़ने के लिए एक लेख या ब्लॉग पोस्ट जितना लंबा हो सकता है। विज्ञापन ऑनलाइन हो सकते हैं, जैसे सोशल मीडिया विज्ञापन, या ऑफ़लाइन जैसे पत्रिका लेख या समाचार पत्र विज्ञापन। यह जानने से कि विज्ञापन का लक्ष्य क्या है, आपको मजबूत, प्रभावी और प्रेरक प्रतिलिपि लिखने में मदद मिल सकती है। ब्रांड की ज़रूरतों को समझने के बाद, आप एक बेहतरीन विज्ञापन बना सकते हैं जो ब्रांड और उसकी पेशकशों की ओर ध्यान आकर्षित करता है। इससे ग्राहकों की रुचि बढ़ती है और वे किसी सेवा का लाभ उठाने या उत्पाद खरीदने के इच्छुक हो सकते हैं। विज्ञापन किसी भी उद्योग में किसी भी व्यवसाय में बिक्री उत्पन्न करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। एक प्रभावशाली विज्ञापन कैसे लिखें? निम्नलिखित चरण और युक्तियाँ आपको एक प्रभावी विज्ञापन लिखना सिखा सकती हैं: 1. माध्यम निर्धारित करें अपना विज्ञापन लिखने से पहले यह सोचें कि आप इसे कहाँ प्रकाशित करना चाहते हैं। आज के बाज़ार में, अधिकांश विज्ञापन ऑनलाइन समाप्त होते हैं, चाहे वह वीडियो हो, इन्फोग्राफिक हो या लेख हो, इसलिए माध्यम की परवाह किए बिना अपने लेखन को डिजिटलीकरण के लिए अनुकूलित करना एक उत्कृष्ट रणनीति है। पारंपरिक विज्ञापन भाषा और प्रस्तुति में कुछ बदलावों के साथ किसी भी माध्यम पर काम कर सकते हैं। 2. अपने दर्शकों को पहचानें इससे पहले कि आप अपने विज्ञापन पर काम करना शुरू करें, अपने लक्षित दर्शकों की पहचान करें। इससे आपको यह सुनिश्चित करने में मदद मिलेगी कि आप इस तरह से लिख रहे हैं जो आपके लक्षित दर्शकों से जुड़ सके। ग्राहक व्यक्तित्व स्थापित करने से आपको अपने जनसांख्यिकीय को बेहतर ढंग से पहचानने में मदद मिल सकती है और यह सुनिश्चित हो सकता है कि आप अपनी सामग्री को उनकी विशिष्ट रुचियों और आवश्यकताओं के अनुरूप बनाने में सक्षम हैं। 3. एक शीर्षक बनाएं आपके लेख के लिए एक शीर्षक या शीर्षक आवश्यक है, यह सुनिश्चित करने के लिए कि यह आपके दर्शकों को आकर्षित करता है और उन्हें आपके ब्रांड या व्यवसाय से क्या मिल सकता है, इसकी उपयोगी जानकारी प्रदान करता है। पाठकों को यह दिखाने के लिए एक मूल्य प्रस्ताव शामिल करें कि वे आपके विज्ञापन को पढ़ने या आपकी सामग्री से जुड़ने से क्या हासिल कर सकते हैं। इससे वे आपके विज्ञापन को पढ़ना या देखना जारी रखने के लिए उत्सुक हो सकते हैं। 4. एक हुक शामिल करें अपने पाठक को मोहित करने और उन्हें पढ़ना जारी रखने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए अपने विज्ञापन की पहली पंक्ति का उपयोग करें। दिलचस्प भाषा और शब्दावली का उपयोग करें जो सीधे आपके लक्षित जनसांख्यिकीय से संबंधित हो। आपका हुक ध्यान खींचने के लिए विभिन्न लेखन उपकरणों का उपयोग कर सकता है, जैसे कोई प्रश्न, परिदृश्य या तथ्यपाठक. 5. दूसरे व्यक्ति का प्रयोग करें पाठक से सीधे बात करने के लिए अपने लेखन में दूसरे व्यक्ति का उपयोग करें। पाठक को सीधे संबोधित करने से विज्ञापन अधिक व्यक्तिगत हो जाता है। यह आपके लेखन के लहजे को संवादी बनाए रखने में मदद करता है, और आपके पाठक को यह महसूस करने में मदद कर सकता है कि आपने यह लेख विशेष रूप से उनके लिए लिखा है। 6. एक समस्या सूचीबद्ध करें किसी पाठक को आपके उत्पाद या सेवा पर विचार करने के लिए प्रेरित करने की एक प्रभावी रणनीति उस समस्या की पहचान करना और उसे चित्रित करना है जिसका वे सामना कर रहे हैं। सुनिश्चित करें कि आपका उत्पाद या सेवा इस समस्या का समाधान करती है। ग्राहक की समस्या का स्पष्ट रूप से वर्णन करें और समस्या से निपटने के कुछ संबंधित पहलुओं पर प्रकाश डालें। 7. समाधान साझा करें किसी ग्राहक की समस्या की पहचान करने के बाद, साझा करें कि आपकी कंपनी का उत्पाद या सेवा उस समस्या का समाधान कैसे करती है। वर्णनात्मक बनें और उस खुशी, खुशी, राहत या अन्य भावनाओं को उजागर करें जो ग्राहक अपने दर्द बिंदु को हल करने के बाद महसूस कर सकते हैं। यह उल्लेख करना सुनिश्चित करें कि समस्या को हल करने के लिए आपका उत्पाद या सेवा ग्राहक के लिए सबसे अच्छा विकल्प कैसे है। 8. अपने उत्पाद का वर्णन करें आप ग्राहक को जो उत्पाद या सेवा दे रहे हैं उसका विवरण प्रदान करें। सुनिश्चित करें कि यह अनुभाग आप जो पेशकश कर रहे हैं उसका विस्तृत विवरण देने के बजाय केवल मुख्य अंश साझा करता है। हो सकता है कि आप ग्राहक में जिज्ञासा पैदा करके उसे आगे भी पढ़ना जारी रखने के लिए प्रोत्साहित करना चाहें। उत्पाद या सेवा विवरण को सीधे शेष लेखन की कथा से जोड़ने पर विचार करें। 9. अपने प्रतिस्पर्धियों के विज्ञापनों की समीक्षा करें एक बार जब आपको पता चल जाए कि आप किस प्रकार की विज्ञापन प्रति लिखना चाहते हैं, तो अपने प्रतिस्पर्धियों के विज्ञापनों पर शोध करें। यह आपको यह देखने की अनुमति देता है कि किस प्रकार की सामग्री अच्छी तरह से काम करती है और किस प्रकार के संशोधन का उपयोग किया जा सकता है। आपके उद्योग में वर्तमान विज्ञापनों की समीक्षा करना रुझानों पर नज़र रखने और व्यापक परीक्षण किए बिना प्रारंभिक लेखन निर्णय लेने का एक उपयोगी तरीका है। 10. अपने प्रतिस्पर्धी लाभ पर प्रकाश डालें एक बार जब आप अपने प्रतिस्पर्धियों के विज्ञापनों को देखेंगे, तो आपको यह अंदाजा हो जाएगा कि आपका उत्पाद या सेवा उनके उत्पाद या सेवा से किस प्रकार भिन्न है। सुनिश्चित करें कि आप अपने उत्पाद या सेवा द्वारा ग्राहक को प्रदान किए जाने वाले विशिष्ट विक्रय बिंदु (यूएसपी) को साझा करते हैं। आप पाठक को यह विश्वास दिलाने के लिए मार्केटिंग और विज्ञापन रणनीतियों का उपयोग कर सकते हैं कि आपका उत्पाद या सेवा उनके द्वारा खरीदे गए किसी भी अन्य उत्पाद या सेवा से बेहतर है। प्रतिस्पर्धियों को संबोधित करने के बजाय, इस बात पर ध्यान केंद्रित करें कि आपका आइटम उपभोक्ता के लिए सबसे अच्छा विकल्प क्यों है। 11. ईमानदार रहो सुनिश्चित करें कि आपके द्वारा अपने लेखन में शामिल की गई सभी जानकारी सत्यापन योग्य और सटीक है। यदि संभव हो, तो अपनी कंपनी की पारदर्शिता, विश्वसनीयता और ईमानदारी को दर्शाने के लिए आंकड़ों या अन्य दावों के लिंक या उद्धरण शामिल करें। इससे मौजूदा ग्राहकों को बनाए रखने में भी मदद मिलती है। 12. एक उद्धरण पर विचार करें यदि आपके पास ग्राहकों के प्रशंसापत्र हैं, तो उनके खरीदारी अनुभव के बारे में एक उद्धरण जोड़ने पर विचार करें। आप एक उपयोगकर्ता के रूप में उत्पाद या सेवा से उनकी संतुष्टि या कंपनी के कर्मचारियों के साथ उनकी सकारात्मक बातचीत का भी उल्लेख कर सकते हैं। यह आपके विज्ञापन में विश्वसनीयता जोड़ने में मदद कर सकता है। 13. सांख्यिकी का प्रयोग करें आँकड़े, मेट्रिक्स और अन्य संख्याएँ आपके लेखन में विश्वसनीयता जोड़ते हैं और अन्यथा पाठ-भारी लेख में दृश्य रुचि बढ़ाते हैं। यदि प्रासंगिक हो, तो अपने लेखन में अपने उत्पाद या कंपनी के बारे में उपयोगी मेट्रिक्स शामिल करें। यह आपके पाठकों को आपके ब्रांड, उत्पाद या सेवा से जुड़ने के लिए प्रेरित कर सकता है। 14. खोज इंजन के लिए अनुकूलन करें सुनिश्चित करें कि आपने अपने विज्ञापन की प्रतिलिपि लिखते समय और ऑनलाइन पोस्टिंग की तैयारी करते समय खोज इंजन अनुकूलन (एसईओ) दिशानिर्देशों पर विचार किया है। एसईओ शामिल हैयह सामग्री और पृष्ठभूमि कोडिंग और प्लेसमेंट दोनों है। एसईओ रणनीतियों के साथ, आपका टुकड़ा ऐसे हस्तक्षेपों के बिना ऑनलाइन बेहतर प्रदर्शन कर सकता है। 15. कीवर्ड जोड़ें खोज इंजन अनुकूलन का उपयोग करके ऑनलाइन ट्रैफ़िक आकर्षित करने के लिए कीवर्ड महत्वपूर्ण हैं। यदि आप अपना विज्ञापन लेखन ऑनलाइन पोस्ट कर रहे हैं, तो सुनिश्चित करें कि आप ऐसे कीवर्ड शामिल करें जिनका उपयोग संभावित खरीदार अपनी समस्या का समाधान ढूंढते समय ऑनलाइन खोज करते समय कर सकता है। यदि आपका विज्ञापन ऑफ़लाइन होने वाला है, तो कीवर्ड हाइलाइट करने पर विचार करें। 16. संक्षिप्त रहें अपना लेखन संक्षिप्त, सरल और सीधा रखें। आप आदर्श रूप से चाहते हैं कि आपका पाठक संपूर्ण आलेख के दौरान जुड़ा रहे, ताकि उन्हें आपके उत्पाद या सेवा के बारे में सभी महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त हो। संक्षिप्त भाषा विज्ञापनों में इस लक्ष्य को पूरा करने में मदद कर सकती है। 17. दृश्य जोड़ें अपनी लिखित सामग्री में एक छवि, फोटो, चित्रण या वीडियो जोड़ने पर विचार करें। किसी दृश्य का उपयोग शुरू में आपके पाठक का ध्यान आकर्षित करने में मदद कर सकता है। यह उन्हें विज्ञापन देखने के बाद पढ़ते रहने के लिए प्रोत्साहित कर सकता है। 18. पैराग्राफ छोटे रखें अपने अनुच्छेदों को छोटा रखने से आपके पाठक को आपका विज्ञापन पढ़ते रहने के लिए प्रोत्साहन मिलता है। पठनीयता में सुधार के लिए आप शीर्षकों, उपशीर्षकों, बुलेट बिंदुओं और अन्य शैलीगत तत्वों का उपयोग कर सकते हैं। इससे आपके पाठक को जानकारी को शीघ्रता से पार्स करने और एक नज़र में आपके लेखन से सबसे महत्वपूर्ण विवरण और जानकारी एकत्र करने में मदद मिलती है। 19. वेबसाइट से लिंक करें यदि आप अपना लेख ऑनलाइन पोस्ट करने जा रहे हैं, तो सुनिश्चित करें कि आप अपने लेखन में अपनी कंपनी की वेबसाइट और उत्पाद या सेवा पृष्ठ के लिंक शामिल करें। इससे ग्राहक आसानी से उपयुक्त पृष्ठ पर जा सकते हैं और संभावित रूप से तत्काल खरीदारी कर सकते हैं। वेबसाइट ब्राउज़ करते समय आप अन्य उत्पादों के विज्ञापन भी प्रदर्शित कर सकते हैं जिनमें उनकी रुचि हो सकती है। 20. परीक्षण करें समान विज्ञापन के साथ अपने टुकड़े पर विभाजित परीक्षण या ए/बी परीक्षण करने पर विचार करें। ए/बी परीक्षण के साथ, आप अपने लक्षित जनसांख्यिकीय के लोगों से इस बारे में राय प्राप्त कर सकते हैं कि उनके किस अंश को पढ़ने और उस पर प्रतिक्रिया देने की अधिक संभावना है। ए/बी परीक्षण व्यापक पहुंच वाले विज्ञापनों के लिए उपयोगी हो सकता है, यह सुनिश्चित करने के लिए कि आप सबसे अच्छी और सबसे आकर्षक जानकारी साझा कर रहे हैं। विज्ञापन क्यों महत्वपूर्ण है? विज्ञापन किसी भी व्यवसाय या संगठन के लिए एक निवेश हो सकते हैं। उत्कृष्ट उत्पाद या सेवाएँ जो लुभावने विज्ञापनों के माध्यम से प्रभावी ढंग से विज्ञापित की जाती हैं, मौजूदा ग्राहकों को बनाए रखते हुए आपके ग्राहक आधार को बढ़ाने की कुंजी हैं। विज्ञापन किसी ब्रांड को जनता के सामने उजागर करने का एक अवसर है, जो बदले में आपके व्यवसाय करने के तरीके को बदल देता है। यदि व्यक्तियों का एक समूह किसी दिलचस्प कहानी के आधार पर या किसी प्रभावशाली लक्ष्य को ध्यान में रखकर एक संगठन या व्यवसाय शुरू करता है, तो विज्ञापनों के माध्यम से कहानी को चित्रित करने से लोगों की अधिक जानने में रुचि बढ़ाने में मदद मिल सकती है। यदि कोई ब्रांड ग्राहकों की प्रतिक्रिया की कमी के कारण बंद होने की कगार पर है, तो विज्ञापन उस स्थिति को बदलने में सक्षम हो सकता है। अच्छी तरह से बनाए गए विज्ञापनों में बिक्री मेट्रिक्स को बेहतरी के लिए बदलने की क्षमता होती है।

राय

दिखावे का आपराधिक बिल

पश्चिम बंगाल विधानसभा में 'अपराजिता महिला एवं बाल विधेयक' (आपराधिक कानून एवं संशोधन) सर्वसम्मति से पारित किया गया। कोलकाता आरजी कर अस्पताल में डॉक्टर बिटिया के रेप-मर्डर के बाद जो तनाव, गुस्सा, आक्रोश और विरोध-प्रदर्शन बंगाल के कई हिस्सों में देखे गए हैं, उन्हें शांत करने का यह एक सियासी प्रयास है। मुख्यमंत्री ममता बनर्जी को आशंका है कि इतने व्यापक विरोध से उनका परंपरागत जनाधार बिखर सकता है, लिहाजा बलात्कार, हत्या, यौन उत्पीडन की कड़ी सजाओं के मद्देनजर उन्हें यह बिल पारित कराना पड़ा। प्रमुख विपक्षी दल भाजपा ने भी बिल का समर्थन किया, क्योंकि यह मुद्दा बेहद संवेदनशील है। अलबत्ता यह दिखावे का बिल साबित होगा और 'राष्ट्रपति भवन' में लटक कर रह सकता है। दरअसल कोई भी राज्य केंद्रीय कानूनों के समानांतर कानून नहीं बना सकता। सभी राज्यों में अपराध और अन्य मामलों में केंद्रीय कानून ही प्रभावी और लागू होते हैं। वैसे राज्यों को अलग कानून बनाने का भी अधिकार है, लेकिन वे केंद्रीय कानून में बदलाव नहीं कर सकते। यदि राज्य ऐसा करता है, तो राज्यपाल को उस पारित विधेयक को राष्ट्रपति के पास भेजना होता है। बंगाल विधानसभा में जो बिल पारित किया गया है, उसमें भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस), भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता और यौन अपराधों से बच्चों का संरक्षण अधिनियम 2012 (पॉक्सो) में संशोधन की बात कही गई है। ये कानून संसद द्वारा पारित किए गए हैं। केंद्रीय कानूनों की धाराओं के तहत बलात्कार, सामूहिक दुष्कर्म और हत्या के लिए 20 साल की सजा, उम्रकैद और फांसी की सजा का प्रावधान है, जबकि 'अपराजिता बिल' में सिर्फ फांसी के प्रावधान का ही प्रस्ताव है। बीएनएस के तहत बाल अपराधियों के लिए रियायतों का प्रावधान है, लेकिन 'अपराजिता' में उन्हें खत्म करने का प्रस्ताव है।

गौरतलब है कि जांच, न्याय और सजा के लिए जो अवधि तय की गई है, वह अव्यावहारिक है, क्योंकि भारत में न्याय की परतें कई हैं। यदि फास्ट ट्रैक कोर्ट आरोपित को फांसी की सजा सुना भी देती है, तो उस फैसले को उच्च न्यायालय में चुनौती दी जा सकती है। उच्च न्यायालय के बाद सर्वोच्च अदालत है। अंततः राष्ट्रपति को दया-याचिका दी जा सकती है। मात्र 10 दिन में इन सभी आयामों से न्याय पाना असंभव है, लिहाजा 10 दिन में फांसी की सजा महज नारेबाजी है। जनता को भ्रमित करने की राजनीति है, ताकि कोलकाता की सडक़ें तमाम तरह की सियासत से मुक्त हो सकें। 2012 के 'निर्भया कांड' का अंतिम फैसला 8 लंबे सालों के बाद मिला था। नतीजतन उसके बाद ही बलात्कारियों को फांसी पर लटकाया जा सका। उसके बाद किसी भी बलात्कारी को मृत्युदंड नहीं दिया जा सका। यह हमारे कानून के छिद्र हैं, हालांकि 'निर्भया कांड' के बाद जस्टिस जेएस वर्मा आयोग बनाया गया था। इस आयोग ने व्यापक विमर्श के बाद, बहुत ही कम समय में, अपनी रपट दी थी। उसके आधार पर केंद्र ने जो कानून बनाया, उसमें भी दोषी को अधिकतम सजा के तौर पर मृत्युदंड का प्रावधान था। हमारे देश और समाज में बलात्कार के औसतन 86 केस हर रोज दर्ज कराए जाते हैं, कितनों को फांसी की सजा दी जाती है? बंगाल में सत्तारूढ़ तृणमूल कांग्रेस विपक्षी खेमे की एक महत्वपूर्ण पार्टी है। इससे पहले आंध्रप्रदेश और महाराष्ट्र ने भी 'मौत की सजा' को अनिवार्य करने वाले बिल पारित किए थे, लेकिन केंद्र से मंजूरी नहीं दी गई। यही नियति अब बंगाल की हो सकती है। ममता बनर्जी ने बिल की आड़ में भी खुन्नस भरी राजनीति की है। उन्होंने सदन में ही प्रधानमंत्री मोदी, गृह मंत्री अमित शाह और उन मुख्यमंत्रियों के भी इस्तीफे मांग लिए, जिनके राज्यों में बलात्कार की संख्या लगभग निरंतर है। चूंकि प्रधानमंत्री पूरे देश के संवैधानिक प्रभारी हैं, लिहाजा वह इस्तीफा दें, क्योंकि वह महिलाओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने में नाकाम रहे हैं।

माटी चुन-चुन महल बनाया

हम हर तरह की हिंसा से परहेज करें और अपनी सांसों पर ध्यान दें तथा मौन की साधना करें तो हम आध्यात्मिकता की ओर निश्चित कदम बढ़ा लेते हैं। सांसों पर ध्यान का मतलब सिर्फ इतना सा है कि हम एकांत में बैठें, चुपचाप बैठें और सिर्फ अपनी आती-जाती सांस की ओर ध्यान फोकस करें। नासिका और ऊपर के होठ के बीच की जगह पर ध्यान फोकस करें तो हम आती-जाती सांस को महसूस कर सकते हैं। इस अवस्था में हमें करना कुछ नहीं है। सांस को नियंत्रित नहीं करना, तेज या धीमा नहीं करना, गहरा या छोटा नहीं करना, बस सिर्फ आती-जाती सांस पर ध्यान देना है, मौन रहना है और यदि ध्यान भटके तो उसे फिर से सांस पर ले आना है'

स्पिरिचुअल हीलर

सिद्धगुरु प्रमोद जी

गिन्नीज विश्व रिकार्ड विजेता लेखक

हम सब एक शरीर के साथ जन्म लेते हैं। यह शरीर जो हमें दिखता है, यह एक स्थूल शरीर है और इसकी अपनी सीमाएं हैं। जीवन में रहते हुए यह शरीर सुख-दुख भोगता है, बीमारी आदि भोगता है। अगर मोटी-मोटी बात करें तो हमारा एक और शरीर भी है जो सूक्ष्म शरीर है। सूक्ष्म शरीर एक प्रकाश पुंज मात्र है। हमारा यह सूक्ष्म शरीर बहुत शक्तिशाली है। यह भी सुख-दुख भोगता है। मृत्यु के पश्चात यदि हमें मोक्ष न मिले तो हमारा सूक्ष्म शरीर धरती की दुनिया से ऊपर की दुनिया में चला जाता है और समय आने पर फिर से जन्म लेकर संचित कर्मों के फल भोगता है तथा नए कर्म करता है। अगला जन्म लेने से पूर्व यही शरीर स्वर्ग-नर्क भी भोगता है। आत्मा इन दोनों शरीरों से परे है। यह सुख-दुख से परे है और परमात्मा का शुद्ध अंश है। भगवान श्री कृष्ण ने श्रीमद्भगवद गीता में इसी के बारे में बताया है कि यह अजर-अमर है। इस पर हवा, पानी, आग और हथियारों आदि का कोई असर नहीं होता। निर्वाण की स्थिति में आत्मा ही परमात्मा में विलीन होती है जिससे हमें जीवन-मरण के चक्र से छुटकारा मिल जाता है। ऋषियों, मुनियों, मनीषियों ने इस संसार को मिथ्या और जीवन को सपना इसलिए कहा क्योंकि हमारा यह शरीर नश्वर है और जीवन के बाद कभी न कभी मृत्यु का होना भी निश्चित है। मृत्यु के बाद यह शरीर नहीं रहता। जब हम जरा गहराई में जाते हैं तो यह समझ आता है कि यह जीवन वास्तव में एक स्कूल है जहां हम इसलिए आते हैं ताकि निर्वाण की प्राप्ति के लिए हम अभी तक जो नहीं सीख पाए हैं, वह सीख लें और जीवन-मरण के चक्र से मुक्त होकर सर्वेश्वर परमपिता परमात्मा से जा मिलें।

जब हम दोबारा जन्म लेते हैं तो हम अपने संचित कर्मों का फल तो भोगते ही हैं, पर साथ ही हम नए कर्म भी करते हैं। ये नए कर्म ही अगर ऐसे हों जो हमें परमात्मा के और करीब ला सकते हों, तो हम निर्वाण की ओर बढ़ते चलते हैं। शरीर नश्वर है और जीवन के साथ मृत्यु अवश्यंभावी है, तो हमारे कर्मों के अलावा यहां प्राप्त की गई अथवा जोड़ी गई शेष हर चीज यहीं रह जाएगी। हमें कोई संपत्ति विरासत में मिले या हम स्वयं अर्जित करें, वो अंततः यहीं रह जाएगी। अक्सर तो ऐसा भी होता है कि किसी ने बहुत मेहनत करके, कंजूसी करके, बचत कर-कर के कुछ बनाया, लेकिन अपने जीवन में उसे कभी भोग नहीं पाया और चाहे अपनी संतानों के लिए अथवा दुनिया के लिए छोडक़र स्वर्गवासी हो गया। इसीलिए संत कबीर दास जी ने कहा कि माटी चुन-चुन महल बनाया, लोग कहें घर मेरा, ना घर तेरा, ना घर मेरा, चिडिया रैन बसेरा, कौड़ी-कौड़ी माया जोड़ी, जोड़ भरेला थैला, कहत कबीर सुनो भाई साधो, संग चले ना धेला, उड़ जाएगा हंस अकेला, जग दो दिन का मेला। हम सब अक्सर समय की कमी का रोना रोते हैं। अक्सर हम कहते हैं कि अगर हमारे पास समय होता तो हम फलां-फलां काम कर लेते, पर असली सच यह है कि समय ही एक ऐसी वस्तु है जिसका हम सबसे ज्यादा दुरुपयोग करते हैं, समय ही ऐसी वस्तु है जिसे हम सबसे ज्यादा बेकार में गंवाते हैं, समय ही एक ऐसा उपहार है कि हम जिसकी कीमत नहीं समझते और इसे व्यर्थ के कामों में, उलझनों में, लड़ाई-झगड़ों में, किसी की आलोचना में, किसी की निंदा में, षड्यंत्रों में और गपशप में गंवा देते हैं। तभी तो हमारे ऋषियों, मुनियों, संतों और मनीषियों ने कहा है कि हीरा जनम अमोल सा, कौड़ी बदले जाए, जबकि इसी समय का सदुपयोग करके हम निर्वाण की ओर कदम बढ़ा सकते थे और सर्वशक्तिमान त्रिलोकीनाथ सवेश्वर परमात्मा से मिल पाने का जुगाड़ कर सकते थे। सवाल उठता है कि हम परमात्मा से मिलन के लिए क्या कर सकते हैं, और कैसे कर सकते हैं। हर धर्म परमात्मा के मिल पाने के रास्ते बताता है। 'सहज संन्यास मिशन' ने इसे 'न भागो, न त्यागो, सिर्फ जागो' का मंत्र देकर बहुत आसान बना दिया है।

इस मंत्र का खुलासा करें तो हमें समझ में आता है कि परमात्मा की प्राप्ति के लिए हमें संसार से भागने की आवश्यकता नहीं है, संसार को त्यागने की आवश्यकता नहीं है, बल्कि सिर्फ जागरूक होकर आत्म-मंथन करके अपनी सोच और अपने जीवनयापन के ढंग में कुछ छोटे-छोटे और आसान बदलाव करके आध्यात्मिकता की ओर बढ़ते रहना है। इसी दुनिया में रहकर, समाज में रहकर, परिवार में रहकर, अपनी जिम्मेदारियां निभाते हुए, हमें सिर्फ इतना करना है कि हम किसी भी तरह की कोई हिंसा न करें। यहां हमें यह समझना होगा कि 'हिंसा' की अवधारणा बहुत व्यापक है। जीव की हत्या तो हिंसा है ही, पर उसके अलावा जब हम किसी की निंदा करें, चुगली करें, शिकायत करें, दोषारोपण करें, अपमान करें, क्रोध करें तो यह भी हिंसा है। किसी का दिल दुखाना हिंसा है, पर सिर्फ किसी का दिल दुखाना ही हिंसा नहीं है, अपना दिल दुखाना भी हिंसा है। जब हम अपमानित महसूस करते हैं, अपनी किसी गलती पर पछताते हैं, किसी पर गुस्सा करते हैं, तो हम दुखी हो जाते हैं। यह समझना आवश्यक है कि क्रोध इसलिए आता है क्योंकि हम दुखी हुए। किसी ने हमारी बात नहीं मानी और हम दुखी हुए तो गुस्सा आया। किसी ने हमारा अपमान कर दिया और हम दुखी हुए तो गुस्सा आया। किसी ने हमारा नुकसान कर दिया और हम दुखी हुए तो गुस्सा आया। तो क्रोध का कारण दुख है और दुखी होना खुद की हिंसा है। इसी तरह अपने शरीर का ध्यान न रखना, अपनी सेहत का ध्यान न रखना, जंक फूड खाकर शरीर को बीमार करना, चिंता करते हुए, उदास रहते हुए, डर-डर कर जीवन जीते हुए अपनी सेहत को खतरे में डालना खुद के प्रति हिंसा है।

हमें हर हालत में हर तरह की हिंसा से बचना है। यही आध्यात्मिकता है। यह आध्यात्मिकता की शुरुआत है। हम हर तरह की हिंसा से परहेज करें और अपनी सांसों पर ध्यान दें तथा मौन की साधना करें तो हम आध्यात्मिकता की ओर निश्चित कदम बढ़ा लेते हैं। सांसों पर ध्यान का मतलब सिर्फ इतना सा है कि हम एकांत में बैठें, चुपचाप बैठें और सिर्फ अपनी आती-जाती सांस की ओर ध्यान फोकस करें। नासिका और ऊपर के होठ के बीच की जगह पर ध्यान फोकस करें तो हम आती-जाती सांस को महसूस कर सकते हैं। इस अवस्था में हमें करना कुछ नहीं है। सांस को नियंत्रित नहीं करना, तेज या धीमा नहीं करना, गहरा या छोटा नहीं करना, बस सिर्फ आती-जाती सांस पर ध्यान देना है, मौन रहना है और यदि ध्यान भटके तो उसे फिर से सांस पर ले आना है। बस इतना ही। धीरे-धीरे के अभ्यास से हम इस काबिल हो जाएंगे कि हमारे दिमाग के विचार शांत हो जाएं और हम दिव्य तंद्रा की स्थिति तक पहुंच जाएं। शुरुआत यहीं से होगी, बाकी सब अपने आप होता चलेगा। चलना शुरू करेंगे तो आगे के रास्ते खुद-ब-खुद खुलते चलेंगे। हमें बस शुरुआत करनी है। ऐसा कर लिया तो हम इस जीवन रूपी स्कूल की सीख समझ सकेंगे और निर्वाण की तरफ बढ़ सकेंगे, आखिर यही तो हमारा लक्ष्य है।

मुखौटों से भरी दुनिया

बदलते हुए समाज विज्ञान की शोध में नए आंगन खुलते रहते हैं। नई शोध का विषय पिछले दिनों एक यह भी रहा है कि कार्टून बनाने वाले क्यों यह सच बांचते नजर आते हैं, जब वे देश के महाभ्रष्ट लोगों और सब कुछ समेट कर अपनी जेब में डाल लेने वाले लोगों को भारी-भरकम और तोंदियल बताते हैं तो जंचता है। मुफ्त लंगर और राशन बांटने वाले की कतारों में जो लोग अंतहीन नुक्कड़ तक खड़े नजर आते हैं, वे तो लगता है, अभी गिरे कि गिरे क्योंकि सब सींकिया बदन और फटेहाल हैं। होने भी चाहिएं। आजकल बेकारी, बीमारी और निकम्मेपन के दिनों में भिक्षा पात्र लेकर भिक्षा देहि के नारों के साथ द्वार-द्वार भटकना एक ऐसा आमफहम सत्य हो जाता है कि लगता है कि अगर इसे देश का नया घरेलू उद्योग घोषित कर दिया जाए, तो अतिकथन न होगा। सरकारी स्तर पर आम जनता के इन कठिन दिनों में मुफ्तखोरी को दया धर्म कह कर दुरुह समस्याओं का एक सरल समाधान मान लिया गया है। समस्या तो एक भी हल होती नजर नहीं आई, बल्कि बेकारी माशा अल्लाह नए कुलांचे भर रही है। अब तो बेकारों की कतार इतनी लंबी होती नजर आ रही है कि विद्वान बताते हैं कि पिछले पैंतालीस बरस में इतनी महंगाई नहीं देखी। बात न कीजिए बढ़ती महंगाई की। वर्तमान सुशासन युग शुरू हुआ था तो घोषणा की गई थी कि न रहेगा बांस और न बजेगी बांसुरी अर्थात न रहेगी महंगाई और न करेगा कोई चोर बाजारी, लेकिन ये कैसे दिन आए बन्धु, चोर बाजारी तो इस देश के लोगों की स्वाभाविक वृत्ति बन गई है। अब देखो न नई नई महामारियों का संक्रमण भय मौत का डंडा सिर पर बजा रहा है और चार लोग दवाओं की बात छोड़ो, उनके माकूल होने की अफवाहों पर भी चोर बाजारी कर रहे हैं। बढ़ती हुई कीमतों की भली पूछिए। सरकार कहती है कि इन दिनों में आर्थिक गतिविधियां बहुत तेज हैं। सरकारी खजाना भरा हुआ है।

लेकिन फिर भी कर्मचारियों का वेतन लेटलतीफ हो रहा है, लेकिन जरूरी चीजों की कीमतें आतिशबाजी होकर आकाश की ओर उड़ रही हैं। ऐसी ऐसी बातें होती हैं कि असल सच किसी के पल्ले नहीं पड़ता। अब भला पूछिये मेहरबानों से कि दुनिया भर में पैट्रोलियम उत्पादों की कीमतें गिरकर धरती चूम रही हैं और अपने देश में पैट्रोल और डीजल की कीमतों का कनकौआ आसमान की ओर क्यों उड़ाया जा रहा है? पहले कहा, सरकारी खजाना भरना है, इसलिए कीमत स्तर को काठ मार जाने दो, इसे गिरने नहीं देना है। देखते ही देखते बाजार में जरूरी वस्तुओं की कीमतें कुलांचें भरने लगीं और आम आदमी उदास होकर सोचता है कि भैय्या यह कैसी तरक्की है? 'यह तो जाते थे जापान पहुंच गए चीन, समझ गए न।' अब गाने में तो कहा गया है, 'मन्नू तेरा हुआ अब मेरा क्या होगा?' अब आम आदमी क्या अपने अच्छे दिनों की इसी तरह उम्मीद करें? जी नहीं, उससे पहले राज्य सरकारों को भी तो अपनी गरीबी दूर करनी है। उन्हें भी तो अपना वैट बढ़ा कर अपनी स्थानीय आर्थिक दुर्दशा की मरहम पट्टी करनी है। हां, चुनावी मजबूरी आ गई तो उन्हीं स्थानीय करों को घटाकर वाहवाही लूटी जा सकती है। बंधु, यह काम थोड़ा छिप-छिप कर भी करना पड़ता है। अब देखो न पहले गैस का ईंधन सिलेंडर दो दामों पर मिलता था। एक थोड़ा सस्ता अनुदान सहायता प्राप्त और दूसरा सामान्य बिना सहायता के। अब पैट्रोलियम उत्पादों की घटती कीमतों का यह प्रभाव हुआ कि मिर्जा नौशा भी कह उठे, 'बर्फ गिरती है तो बेचारे मुसलमीनों पर', अर्थात सामान्य सिलेंडर की कीमत ही कम होकर कटौती वाले सिलेंडर के बराबर हो गई। अब चाहे अनुदान प्राप्त सिलेंडर खरीद कर मुसलमीन कहलाओ। जब कटौती है ही नहीं तो पैसा तुम्हारे खाते में जाएगा कैसे? इसलिए हे दुनिया के कार्टूनिस्टो, तनिक सावधान! पहले भ्रष्ट की पहचान करनी हो तो तोंदियल और मोटा बनाते थे और मरभुक्खे को सींकिया बदन दुबला पतला दिखाते थे। लीजिए, अब तो पहचान के पैमाने ही बदल गए।

क्या अब महिलाओं को अधिक नौकरी देंगे बैंक? RBI गवर्नर ने बैंकों से की ये खास अपील

परिवहन विशेष न्यूज

आरबीआई गवर्नर शक्तिकांत दास ने कहा कि वित्तीय क्षेत्र महिलाओं को अधिक रोजगार के अवसर देकर और महिला-संचालित उद्यमों के लिए खास योजनाएं लाकर महिला-पुरुष असमानता को कम करने में मदद कर सकता है। उन्होंने कहा कि विकसित भारत को यह सुनिश्चित करना होगा कि हर नागरिक की सामाजिक-आर्थिक स्थिति से परे वित्तीय सेवाओं तक पहुंच हो और उसे जरूरी वित्तीय साक्षरता भी हासिल हो।

नई दिल्ली: आरबीआई गवर्नर शक्तिकांत दास ने गुरुवार को कहा कि खपत और निवेश की मांग में लगातार वृद्धि हो रही और देश सतत वृद्धि के पथ पर आगे बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि जीएसटी और 'इन्साल्वेंसी एंड बैंकरप्सी कोड' (आईबीसी) जैसे सुधारों से दीर्घकालिक सकारात्मक परिणाम सामने आए हैं। उन्होंने भूमि, श्रम तथा कृषि बाजारों में और अधिक सुधारों की आवश्यकता पर भी जोर दिया। फिक्की और आईबीए द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित वार्षिक एफआईबीएसी, 2024 सम्मेलन के अपने उद्घाटन भाषण में दास ने वित्तीय क्षेत्र को मजबूत करने और उनसे अपेक्षाओं से संबंधित मुद्दे पर बात की।

भारत के विकास की गाथा बरकरार

दास ने कहा कि विभिन्न आर्थिक क्षेत्रों तथा बाजारों में व्यापक बदलाव हो रहे हैं और देश इन बदलाव के लिए तैयार है। दास ने कहा, 'उन्नत अर्थव्यवस्था बनने की दिशा में हमारे देश की यात्रा को कई कारकों के अनूठे मिश्रण से बल मिल रहा है। इन कारकों में युवा आबादी, जुझारू व विविध अर्थव्यवस्था, मजबूत लोकतंत्र और उद्यमशीलता और नवाचार की समृद्ध परंपरा शामिल है।' उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि भारत के विकास की गाथा बरकरार है और बैंकों का बहीखाता मजबूत है। दास ने निजी क्षेत्र से व्यापक स्तर पर निवेश बढ़ाने का आग्रह किया। गवर्नर ने कहा कि आंकडों से पता चलता है कि भारतीय अर्थव्यवस्था के बुनियादी वृद्धि कारक वास्तव में गति पकड़ रहे हैं और वे धीमे नहीं पड़ रहे हैं।

दास ने कहा, 'इससे हमें यह कहने का साहस मिलता है कि भारतीय वृद्धि की गाथा बरकरार है।' गवर्नर ने कहा कि मुद्रास्फीति तथा वृद्धि के बीच सही संतुलन कायम है। बेहतर मानसून तथा खरीफ की अच्छी बोआई से खाद्य मुद्रास्फीति का परिदृश्य अधिक अनुकूल हो सकता है। उन्होंने कहा कि केंद्र और राज्य सरकारों के सरकारी व्यय में वर्ष की शेष तिमाहियों में बजट अनुमानों के अनुरूप गति आने की संभावना है, ऐसे में आरबीआई का 2024-25 के लिए जीडीपी वृद्धि का 7.2 प्रतिशत का अनुमान बेतुका नहीं लगता है।

डिजिटल प्लेटफार्म की पहुंच बढ़ाएं

दास ने कहा कि वित्तीय क्षेत्र को समावेशी वृद्धि को बढ़ावा देने के लिए डिजिटल प्लेटफार्म तक पहुंच बढ़ानी चाहिए और उनका इस्तेमाल करना चाहिए। उन्होंने जोखिम निर्धारण मानकों को कमजोर किए बिना महिलाओं के नेतृत्व वाले व्यवसायों और सूक्ष्म, लघु और मझोले उद्यम (एमएसएमई) के अनुरूप उत्पाद तथा सेवाएं पेश करने की भी वकालत की। दास ने कहा कि विवेकपूर्ण ऋण सुनिश्चित करने के लिए 'यूनिफाइड लेंडिंग इंटरफेस' (यूएलआइ) मंच पर केवल विनियमित संस्थाओं को ही अनुमति दी जाएगी। दास उन्होंने कहा, 'यूएलआइ कुछ चुन्नदा कंपनियों का 'क्लब' नहीं होगा।'

महिलाओं को अधिक रोजगार दें बैंक

आरबीआई गवर्नर शक्तिकांत दास ने कहा कि वित्तीय क्षेत्र महिलाओं को अधिक रोजगार के अवसर देकर और महिला-संचालित उद्यमों के लिए खास योजनाएं लाकर महिला-पुरुष असमानता को कम करने में मदद कर सकता है। उन्होंने कहा कि विकसित भारत को यह सुनिश्चित करना होगा कि हर नागरिक की सामाजिक-आर्थिक स्थिति से परे वित्तीय सेवाओं तक पहुंच हो और उसे जरूरी वित्तीय साक्षरता भी हासिल हो।

उन्होंने कहा कि भारत में महिलाओं की श्रमबल में भागीदारी वैश्विक औसत की तुलना में काफी कम है। इस फासले को कम करने के लिए लड़कियों की शिक्षा, कौशल विकास, कार्यस्थल पर सुरक्षा और सामाजिक बाधाएं दूर करने की दिशा में प्रयास करने होंगे।

11 करोड़ किसानों को सशक्त करेगी सरकार, सभी को मिलेगी डिजिटल पहचान

भारत सरकार का फोकस एग्रीकल्चर सेक्टर के विकास पर है। इसके लिए भारत सरकार अब नया प्लान लेकर आई है। केंद्र सरकार ने किसानों के लिए डिजिटल कृषि मिशन नामक योजना बनाई है। सरकार का लक्ष्य है कि वित्त वर्ष 2026-27 तक सभी किसानों को योजना का लाभ मिले। वर्तमान में इस योजना का लाभ 11 करोड़ किसानों को होगा।

नई दिल्ली। केंद्र सरकार ने देश के करोड़ों किसानों के लिए नई पहल शुरू कर दिया है। अब सरकार किसानों को यूनिक किसान आईडी कार्ड (Unique Kisan ID Card) देने की तैयारी कर रही है। यह कार्ड आधार कार्ड (Aadhaar Card) जैसा ही होगा।

सरकार की पूरी कोशिश है कि अगले तीन साल तक सभी किसानों के पास यूनिक किसान आईडी कार्ड हो। वहीं, चालू वित्त वर्ष को लेकर सरकार का लक्ष्य है कि 6 करोड़ किसानों के पास यूनिक किसान आईडी कार्ड पहुंच जाए। यह कार्ड राज्य और केंद्र शासित प्रदेशों द्वारा बनाया जाएगा। यह कार्ड के जरिये किसानों की मॉनिटरिंग करने में मदद करेगा।

कहां होगा यूनिक किसान आईडी कार्ड का इस्तेमाल

यह कार्ड किसानों की मॉनिटरिंग के लिए इस्तेमाल किया जाएगा। इस कार्ड के जरिये सरकार को पता चल जाएगा किसान के पास कितनी जमीन, मवेशी है। इसके अलावा कार्ड के माध्यम से पता चल जाएगा कि किसान ने किस फसल की खेती की है। यह कार्ड देश के सभी किसानों को एक डिजिटल पहचान देने में मदद करेगा।

यह कार्ड सरकार के साथ किसानों के लिए भी काफी फायदेमंद साबित रहेगा। इस कार्ड के जरिये किसान आसानी से फसल बीमा और फसल लोन जैसी सर्विस का लाभ उठा पाएंगे। यहां तक कि गांव की जमीन के नक्शे और बोई गई फसल की जानकारी भी मिलेगी। यह कार्ड डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना (DPI) के रूप में किया गया है।

35 रुपये किलो प्याज बेच रही सरकार, खरीदने के लिए क्या करना होगा?

पिछले कुछ समय से प्याज की कीमतों में लगातार इजाफा हो रहा है। सरकार ने प्याज की कीमतों को काबू में रखने के लिए प्याज की बिक्री शुरू की है। उसने प्याज के भाव को नियंत्रित रखने के लिए कुछ समय के लिए निर्यात पर प्रतिबंध भी लगाया था।

नई दिल्ली। केंद्र सरकार ने दिल्ली-एनसीआर में सस्ती दरों पर प्याज बेचना शुरू कर दिया है। यह प्याज मोबाइल वैन और नेशनल को-ऑपरेटिव कंज्यूमर्स फेडरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (NCCF) की दुकानों से बिक रही है। यहां आप 35 रुपये किलो के हिसाब से प्याज खरीद सकते हैं।

सरकार प्याज क्यों बेच रही?

पिछले कुछ समय से प्याज की कीमतों में लगातार इजाफा हो रहा है। सरकार ने प्याज की कीमतों को काबू में रखने के लिए प्याज की बिक्री शुरू की है। उसने प्याज के भाव को नियंत्रित रखने के लिए कुछ समय के लिए निर्यात पर प्रतिबंध भी लगाया था। सरकार खुद प्याज बेचकर बिचौलियों की मुनाफाखोरी बंद करना चाहती है, ताकि उपभोक्ताओं को राहत मिले।

सस्ती प्याज कैसे बेची जा रही?

NCCF ने महाराष्ट्र और मध्य प्रदेश के किसानों से सीधे प्याज खरीदकर स्टॉक तैयार किया है। इससे सरकार को रियायती दरों पर प्याज बेचने की सहूलियत मिल पा रही है। उपभोक्ता मामले, खाद्य और पब्लिक डिस्ट्रीब्यूशन मंत्री प्रल्हाद जोशी ने दिल्ली के कृषि भवन से प्याज बेचने की पहल की शुरुआत की। उपभोक्ता एनसीयूआई कॉम्प्लेक्स, राजीव चौक, पटेल चौक मेट्रो स्टेशन और नोएडा के कई प्वाइंट समेत कुल 38 जगहों पर प्याज खरीद सकते हैं।

टमाटर और आलू के दाम भी बढ़े

प्याज के साथ-साथ टमाटर और आलू के भाव में भी काफी समय से तेजी का रुख है। जून में इन सब्जियों का दाम 15 से 58 फीसदी तक बढ़ गया था। हालांकि, सरकार का कहना है कि यह मुश्किल कुछ ही वक्त के लिए रहेगी और जल्द ही आलू को छोड़कर बाकी सब्जियों का भाव काबू में आ जाएगा। पिछले महीने टमाटर के थोक भाव में 65.70 फीसदी, प्याज में 35.36 फीसदी और आलू में 17.57 फीसदी की बढ़ोतरी हुई।

1 अक्टूबर से लागू हो रहे शेयर बायबैक के नए नियम, निवेशकों पर क्या होगा असर?

परिवहन विशेष न्यूज

इस साल बजट 2024 में शेयर बॉयबैक (Share Buyback) के नियमों में भी बदलाव की घोषणा की गई थी। बजट 2024 के भाषण में वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा था कि शेयर बॉयबैक पर नया टैक्स सिस्टम लागू होगा। शेयर बॉयबैक के नए नियम 1 अक्टूबर 2024 से लागू होंगे। आइए इस आर्टिकल में जानते हैं कि नए नियमों से निवेशकों को लाभ होगा या फिर नुकसान।

नई दिल्ली: बजट 2024 (Budget 2024) के भाषण में वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण (FM Nirmala Sitharaman) ने बताया था कि शेयर बॉयबैक (Share Buyback) पर नया टैक्स सिस्टम (Tax System) लागू होने वाला है। नए नियम (Share Buyback Rules) 1 अक्टूबर 2024 से लागू होंगे। नए नियम के तहत अगर कोई निवेशक को शेयर बॉयबैक से फायदा मिलता है तो उसे डिविडेंड (Dividend) माना जाएगा।

अब डिविडेंड के आधार पर टैक्स लगाया जाएगा। शेयर बायबैक में जितनी राशि शेयरधारक को मिलेगी उसी हिसाब से पूंजीगत लाभ या हानि की गणना की जाएगी।

बजट में हुए था नए नियमों का एलान

इस साल जुलाई में पेश हुए यूनियन बजट (Union Budget 2024) में वित्त मंत्री ने शेयरों की बॉयबैक से हुई इनकम पर टैक्स लगाने का प्रस्ताव पेश किया था। इसके तहत शेयर की पुनर्खरीद से होने वाली आय को लाभांश के रूप में माना जाएगा। इस नए टैक्स सिस्टम के तहत शेयर बायबैक को कंपनी का अतिरिक्त आमदनी आ जाएगा और उस पर टैक्स (Tax on Share Buyback) लगाया जाएगा।

इन नए नियमों को लेकर विशेषज्ञों का कहना है कि इससे निवेशकों का बोझ बढ़ सकता है और शेयर बायबैक में भी कमी आ सकती है।

निवेशकों को होगा फायदा या नुकसान

शेयर बायबैक के नए नियम निवेशकों के लिए फायदे और नुकसान दोनों ला सकते हैं। विभावंगल अनुकूलकारा प्राइवेट लिमिटेड के फाउंडर एंड मैनेजिंग डायरेक्टर सिद्धार्थ मौर्य ने कहा कि नए नियमों के तहत कंपनियों को बायबैक की प्रक्रिया में अधिक पारदर्शिता और नियमों का पालन करना होगा। इससे निवेशकों को फायदा होगा क्योंकि उन्हें अधिक स्पष्टता मिलेगी कि कंपनियां किस तरह से बायबैक कर रही हैं और इसका उनके निवेश पर क्या प्रभाव पड़ेगा।

सिद्धार्थ मौर्य ने यह भी बताया कि इन नियमों के कारण कंपनियों को बायबैक की प्रक्रिया में अधिक समय लग सकता है। इससे शेयर की कीमतों पर त्वरित लाभ की संभावना कम हो सकती है, जो उन निवेशकों के लिए नुकसानदेह हो सकता है जो जल्दी मुनाफा कमाना चाहते हैं। इसके अलावा, कंपनियों पर अनुपालन की अतिरिक्त लागत भी आ सकती है, जो उनके मुनाफे को प्रभावित कर सकती है।

इसका मतलब है कि नए नियम निवेशकों के लिए दीर्घकालिक सुरक्षा और पारदर्शिता लाएंगे, लेकिन अल्पकालिक निवेश के दृष्टिकोण से कुछ चुनौतियां भी खड़ी कर सकते हैं। दीर्घकालिक निवेशकों के लिए यह नियम सकारात्मक साबित हो सकते हैं, जबकि तुरंत लाभ की उम्मीद रखने वाले निवेशकों को थोड़ी परेशानी हो सकती है।

आज पाकिस्तानी पायलट का बन रहा मजाक, कभी 'एयरलाइन' वाला इकलौता मुस्लिम मुल्क था पाक

मोहम्मद अली जिन्ना ने पाकिस्तान की अपनी एयरलाइन बनाने के लिए दो रईस व्यापारियों- मिर्जा अहमद इस्पहानी और आदमजी हाजी दाऊद से वित्तीय मदद मांगी। इन तीनों की कोशिशों से 23 अक्टूबर 1946 को कलकत्ता (कोलकाता) में ओरिएंट एयरवेज का रजिस्ट्रेशन हुआ। यह ब्रिटिश राज में इकलौती मुस्लिम एयरलाइन थी। वहीं भारत के पास टाटा एयरलाइंस थी जिसकी बुनियाद जेआरडी टाटा इससे करीब दो दशक पहले ही रख चुके थे।

नई दिल्ली: पिछले दिनों पाकिस्तान की एयरलाइन का एक वीडियो काफी वायरल हुआ। इसमें पायलट कॉकपिट में जाने से पहले प्लेन की खिड़की पर कपड़े से पोछा मारता है। जैसा कि आपने कार या ट्रक ड्राइवर को गाड़ी की विंडस्क्रीन साफ करते हुए देखा होगा। इससे कई सोशल मीडिया यूजर्स ने पाकिस्तानी एयरलाइन का मजाक बनाया कि वह और उसके पायलट आजादी के इतने साल भी कितने पिछड़े हुए हैं।

यह बात काफी हद तक सही भी है कि पाकिस्तान आर्थिक मोर्चे पर काफी पिछड़ा हुआ है। एविएशन सेक्टर भी इसका अपवाद नहीं। यही वजह है कि पाकिस्तान का सरकारी विमानन कंपनी 'पाकिस्तान इंटरनेशनल एयरलाइंस' (PIA) के कई क्रू मेंबर्स 'रहस्यमयी' तरीके से गायब हो जाते हैं। खुद PIA भी इसकी पुष्टि कर चुका है। दरअसल, कनाडा में शरण और उसके बाद नागरिकता लेना बाकी पश्चिमी देशों के मुकाबले आसान है। वहां गायब होने के बाद क्रू मेंबर्स एविएशन इंडस्ट्री में आसानी से करियर बना लते हैं।

आइए जानते हैं कि पाकिस्तानी एयरलाइंस का इतिहास कितना पुराना है, इसकी शुरुआत कब और कैसे हुई?

पाकिस्तान में एयरलाइंस का इतिहास

भारत और पाकिस्तान का आधिकारिक तौर पर विभाजन 14 अगस्त 1947 को हुआ। लेकिन, पाकिस्तान के संस्थापक मोहम्मद अली जिन्ना काफी लंबे वक्त से मजहब के आधार पर अलग मुल्क की मांग कर रहे थे। उन्हें पूरा भरोसा था कि ब्रिटिश हुकूमत और भारत के आला नेताओं को उनकी मांग मानने के लिए मजबूर हो जाएंगे। लिहाजा, वह आजादी से पहले ही अपने 'नए मुल्क' के जरूरी इन्फ्रास्ट्रक्चर जुटाने लगे थे।

द्वितीय विश्व युद्ध में हवाई जहाजों ने काफी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसमें सैनिकों की आवाजाही और रसद साम्राज्ञी जैसी चीजें शामिल थीं। यात्रियों के आवागमन के लिए भी विमान का चलन बढ़ रहा था, क्योंकि बाकी सभी माध्यमों के मुकाबले काफी तेज थे। यही वजह थी कि जिन्ना आजादी से पहले ही पाकिस्तान के लिए एयरलाइन का बंदोबस्त करने लगे।

पाकिस्तान की पहली एयरलाइन की नींव

जिन्ना ने अपने मकसद को पूरा करने के लिए दो रईस व्यापारियों मिर्जा अहमद इस्पहानी और आदमजी हाजी दाऊद से वित्तीय मदद मांगी। वे दोनों भी मजहब के आधार अलग मुल्क की मांग के हिमायती थे। इन तीनों की कोशिशों से 23 अक्टूबर 1946 को कलकत्ता (कोलकाता) में ओरिएंट एयरवेज का रजिस्ट्रेशन हुआ। यह ब्रिटिश राज में इकलौती मुस्लिम एयरलाइन थी। भारत के पास टाटा एयरलाइंस थी, जिसकी बुनियाद जेआरडी टाटा इससे करीब दो दशक पहले ही रख चुके थे।

भारत को आजादी मिलने के बाद जब पाकिस्तान अलग मुल्क बना, तो तीन डगलस डीसी-3 विमानों के बेड़े का संचालन करते हुए ओरिएंट एयरवेज ने नए मुल्क में राहत अभियान शुरू किया। अगले दो साल में ओरिएंट एयरवेज ने कराची को दिल्ली, कलकत्ता और ढाका से जोड़ने वाले मार्गों पर अपने नए कॉनवेयर विमान डिप्लॉय किए। यहां तक ओरिएंट एयरलाइंस के सब ठीक था। उसकी उड़ानों की गिनती बढ़ रही थी। एयरलाइन यात्रियों के हिसाब से अच्छा खासा पैसा भी कमा रही थी।

ओरिएंट एयरवेज का बुरा दौर

1950 के दशक की शुरुआत में ओरिएंट एयरवेज को घाटा होने लगा क्योंकि ब्रिटिश ओवरसीज एयरक्राफ्ट कॉरपोरेशन (BOAC) जैसे तगड़े प्रतिस्पर्धी मार्केट में आ गए। पाकिस्तानी सरकार ने अपनी घरेलू एयरलाइन को सब्सिडी देना शुरू कर दिया, ताकि ओरिएंट एयरवेज BOAC और बाकी एयरलाइन के साथ कंपीटिशन कर सके। पाकिस्तान सरकार ने ओरिएंट एयरवेज की नई सहायक कंपनी के लिए तीन लॉकहीड एल-1049 सुपर कांस्टेलेशन का भुगतान भी किया। यही बाद में ₹पाकिस्तान इंटरनेशनल एयरलाइंस (PIA)₹ बनी।

उस समय पाकिस्तान लंबी दूरी की एयरलाइन उड़ाने वाला एकमात्र मुस्लिम और एशियाई देश था। 1 अक्टूबर 1953 को, पाकिस्तानी सरकार ने ओरिएंट एयरवेज का पूरा नियंत्रण अपने हाथ में ले लिया और इसे PIA के साथ मिलाकर आज की एयरलाइन बना दी। विलय के बावजूद ओरिएंट एयरवेज कई सालों तक अपने नाम से काम करती रही।

मुकेश अंबानी का शेयरहोल्डर्स को तोहफा, एक पर एक शेयर मुफ्त देगी रिलायंस

परिवहन विशेष न्यूज

अगर आपके पास भी रिलायंस इंडस्ट्रीज के शेयर हैं तो यह खबर आपके लिए है। आज रिलायंस इंडस्ट्रीज की बोर्ड मीटिंग में बोनस शेयर को लेकर फैसला होने वाला था। कंपनी ने स्टॉक एक्सचेंज को बोर्ड मीटिंग के फैसलों के बारे में बता दिया। इस लेख में जानते हैं कि क्या शेयरधारकों को बोनस शेयर मिलेगा या नहीं।

नई दिल्ली। बिजनेस डेस्क, नई दिल्ली। 29 अगस्त 2024 को रिलायंस इंडस्ट्रीज की सालाना बैठक (Reliance Industries AGM 2024) हुई थी। इस बैठक में रिलायंस के चेयरमैन मुकेश अंबानी (Mukesh Ambani) ने कई अहम एलान किये थे। इन एलानों में से एक बोनस शेयर (RIL Bonus Share) का एलान भी किया गया था। मुकेश अंबानी ने एजीएम में कहा था कि कंपनी शेयरहोल्डर्स को 1:1 का बोनस शेयर यानी 1 शेयर पर 1 शेयर देने पर विचार कर रही है।

बोनस शेयर को लेकर रिलायंस बोर्ड की मीटिंग (RIL Board Meeting) 5 सितंबर 2024 को हुई। अब कंपनी ने बोर्ड मीटिंग के फैसलों की जानकारी शेयर बाजार को दे दी है।

रिलायंस इंडस्ट्रीज ने शेयरधारकों के लिए अहम एलान हो गया है। आज कंपनी के बोर्ड मीटिंग में बोनस शेयर को लेकर फैसला ले लिया गया है। बोर्ड मीटिंग में लिए गए फैसलों के अनुसार स्टॉकहोल्डर को 1:1 रेश्यो के हिसाब से शेयर मिलेगा। इसका मतलब है कि 1 शेयर पर 1 शेयर मिलेगा।

बोनस शेयर के रिकॉर्ड डेट को लेकर अभी कोई एलान नहीं किया गया है।

कब-कब दिया बोनस शेयर (RIL Bonus History)

रिलायंस इंडस्ट्रीज ने शेयरधारक को अभी तक छह बार बोनस शेयर दिया है। सबसे पहली बार शेयरहोल्डर्स को 1980 में 3:5 रेश्यो में बोनस शेयर दिये गए थे। वहीं सबसे ज्यादा बोनस शेयर 1983 में 6:10 रेश्यो में दिया गया था। इसके बाद 1997, 2009 और 2017 में 1:1 रेश्यो में बोनस शेयर दिया गया। आज भी बोर्ड मीटिंग ने 1:1 रेश्यो में बोनस शेयर देने का एलान किया है।

फोकस में रहेगा स्टॉक

5 सितंबर 2024 (गुरुवार) को रिलायंस इंडस्ट्रीज के शेयर (Reliance Industries Share) गिरावट के साथ बंद हुए हैं। कल के सत्र में भी रिलायंस इंडस्ट्रीज के स्टॉक फोकस में रहेंगे। अगर शेयर की भाव के बाद करें तो आज रिलायंस के शेयर (Reliance Industries Share Price) 1.26 फीसदी या 38.10 रुपये की गिरावट के साथ 2,991.00 रुपये प्रति शेयर पर बंद हुआ है।

नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (NSE) की वेबसाइट के अनुसार रिलायंस इंडस्ट्रीज का बाजार पूंजीकरण (Reliance Industries M-Cap) 20,23,655.79 करोड़ डॉलर है। एम-कैप के लिहाज से रिलायंस इंडस्ट्रीज सबसे बड़ी कंपनी है।

वक्फ बिल पर JPC की बैठक में क्यों हुई तीखी बहस? समिति के इन सवालों का अधिकारियों के पास नहीं था कोई जवाब

परिवहन विशेष न्यूज

वक्फ संशोधन विधेयक पर गठित जेपीसी लगातार इससे जुड़े मुद्दों पर बैठकें कर रही है और अलग-अलग लोगों से जानकारी एकत्रित कर रही है। इसी सिलसिले में गुरुवार को समिति के समक्ष मंत्रालयों के शीर्ष अधिकारी पेश हुए। हालांकि बैठक में तीखी बहस भी देखने को मिली और अधिकारी समिति के कुछ सवालों पर कोई जवाब नहीं दे सके। पढ़िए पूरी जानकारी।

नई दिल्ली। वक्फ संशोधन विधेयक पर विचार कर रही संयुक्त संसदीय समिति (जेपीसी) के समक्ष गुरुवार को शीर्ष सरकारी अधिकारी पेश हुए। समिति को राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में वक्फ संपत्तियों, सड़क परिवहन एवं रेलवे मंत्रालयों के भूखंडों के बारे में जानकारी दी गई।

शहरी मामले और सड़क परिवहन सचिव अनुराग जैन और रेलवे बोर्ड के सदस्य (इन्फ्रास्ट्रक्चर) अनिल कुमार खंडेलवाल ने संबंधित मंत्रालयों के अधिकारियों के साथ वक्फ संशोधन विधेयक पर संसदीय समिति के समक्ष प्रजेंटेशन दिया। शहरी मामलों के मंत्रालय के अधिकारियों ने जेपीसी के सदस्यों को 1911 में दिल्ली शहर के विकास के लिए तत्कालीन ब्रिटिश सरकार द्वारा की गई भूमि अधिग्रहण प्रक्रिया के बारे में बताया।

जवाब नहीं दे सके अधिकारी

सूत्रों ने बताया कि बैठक के दौरान उस समय तीखी बहस हुई, जब शहरी मामलों के मंत्रालय के अधिकारी ब्रिटिश प्रशासन द्वारा की गई भूमि अधिग्रहण प्रक्रिया पर सदस्यों के सवालों का जवाब नहीं दे सके। सूत्रों ने बताया कि जेपीसी के सदस्य और द्रमुक सांसद ए. राजा ने कहा कि वक्फ अधिनियम 1913 में पारित किया गया था। शहरी मामलों के मंत्रालय के प्रजेंटेशन में इसका कोई उल्लेख नहीं था।

1970 और 1977 के बीच 138 संपत्तियों पर दावा

मंत्रालय के प्रजेंटेशन के अनुसार, वक्फ बोर्ड ने 1970 और 1977 के बीच 138 संपत्तियों पर दावा किया था, जिन्हें ब्रिटिश सरकार द्वारा नई दिल्ली के विकास के लिए अधिग्रहित किया गया था। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के निर्माण के लिए कुल 341 वर्ग किलोमीटर भूमि अधिग्रहित की गई थी। प्रभावित व्यक्तियों को उचित मुआवजा दिया गया। सदस्य यह भी चाहते थे कि सरकार पता लगाए कि दिल्ली में संपत्तियों पर वक्फ बोर्ड द्वारा किए गए दावे, वक्फ अधिनियम, 1954 में निर्धारित प्रक्रिया का पालन करने के बाद किए गए थे या नहीं।

तेलंगाना में पुलिस और माओवादियों के बीच मुठभेड़, छह नक्सली ढेर; दो जवान घायल-एक गंभीर

परिवहन विशेष न्यूज

तेलंगाना के भद्राद्री कोठागुडेम जिले में गुरुवार सुबह पुलिस और माओवादियों के बीच मुठभेड़ हुई जिसमें 6 माओवादी मारे गए और दो सुरक्षाकर्मी घायल हो गए हैं।तेलंगाना के भद्राद्रि कोठागुडेम जिला अधीक्षक रोहित राज ने पुलिस और नव सलियों के बीच हुई मुठभेड़ की जानकारी दी। साथ ही बताया कि घायल जवानों का अस्पताल में इलाज चल रहा है। एक की हालत गंभीर है।

जगदलपुर। तेलंगाना के भद्राद्री कोठागुडेम जिले में गुरुवार सुबह पुलिस और माओवादियों के बीच मुठभेड़ हुई, जिसमें 6 माओवादी मारे गए और दो सुरक्षाकर्मी घायल हो गए हैं।

तेलंगाना के भद्राद्रि कोठागुडेम जिला अधीक्षक रोहित राज ने बताया कि छत्तीसगढ़ बीजापुर जिले की सीमा से लगे तेलंगाना के भद्रादीकोठागुडम जिला और पिनपाका मंडल करकागुडम के जंगल में गुरुवार तड़के हुई मुठभेड़ में ग्रेहाउंडस के जवानों ने कमांडर लक्ष्मण सहित छह नक्सलियों को मार गिराया।

रोहित राज ने आगे बताया कि मुठभेड़ में तेलंगाना पुलिस के दो जवान घायल हो गए हैं, जिनमें से एक जवान की हालत गंभीर है। जवानों को भद्राचलम के अस्पताल में भर्ती कराया गया है। इनमें एक जवान की हालत गंभीर है।

छत्तीसगढ़ से तेलंगाना भाग रहे थे नक्सली

ऑपरेशन में एसपी पंकज परितोष ने बताया है कि पुलिस के बढ़ते दबाव से नक्सलियों के छत्तीसगढ़ से भागकर तेलंगाना आने की जानकारी मिली थी। कमांडर लक्ष्मण समेत अन्य नक्सली जंगल के रास्ते तेलंगाना की ओर जा रहे थे।

स्थानीय पुलिस और ग्रेहाउंड फोर्स ने नक्सलियों को घेर लिया। इसके बाद भीषण गोलीबारी हुई। इस मुठभेड़ में जहां छह नक्सली ढेर हो गए हैं। बता दें कि मारे गए नक्सलियों की पहचान कुंजा विरैया, तुलसी, शुक्र, चालो, दुर्गेश और कोटो के रूप में हुई है। मौके से हथियार व विस्फोटक सामग्री भी बरामद की गई है।

ओड़िशा की परिबहन मंत्री बिभूति भूषण जीना ने 26 हजार 325 लोगों की जान जाने की जानकारी दी है

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड उडीशा

भुबनेश्वर: राज्य में सड़क दुर्घटनाएं बढ़ रही हैं। 2023 में राज्य में कुल 12 हजार 52 सड़क दुर्घटनाएं हुईं। इस सड़क हादसे में 5 हजार 696 लोगों की जान चली गई थी। सुंदरगढ़ जिले में 448 लोगों की मौत हुई।इसी तरह 10 हजार 419 लोग घायल हुए हैं, सड़क एवं परिवहन मंत्री विभूति भूषण जेना ने विधानसभा में जवाब दिया।इसी तरह पिछले 5 सालों में 2019 से 2023 तक कुल 55 हजार 580 सड़क दुर्घटनाएं हुईं। परिबहन्मंत्री बिभूति भूषण जीना ने 26 हजार 325 लोगों की जान जाने की जानकारी दी है।

मैं केंद्रीय मंत्री धर्मेंद्र प्रधान का भतीजा हूं, कैपिटाल पुलिस ने एक जालसाज को गिरफ्तार किया है

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड उडीशा

भुबनेस्वर्: जालसाज की पहचान राहुल साहू के रूप में हुई, लेकिन वह लोगों को अलग-अलग पहचान दे रहा था।मैं केंद्रीय मंत्री धर्मेंद्र प्रधान का भतीजा हूं। मैं कई नेताओं को जानता हूं। मैं तुम्हें नौकरी दिलाऊंगा, मैं तुम्हारा ट्रांसफर करूंगा, मैं पेट्रोल पंप भी खोलूंगा। कैपिटाल पुलिस ने एक जालसाज को गिरफ्तार किया है जिसने कई लोगों से लाखों रुपये ठगे।बड़े-बड़े नेता अपने सोशल मीडिया पर मंत्रियों के बगल में खड़े होकर अपनी तस्वीरें पोस्ट कर रहे थे। उसे दिखाकर वह लोगों को उनके खास आदमी के रूप में परिचय दे रहा था। यह देखकर आम लोग उन पर विश्वास करने लगे। नतीजा यह हुआ कि लंबे समय से नौकरी और बदलाव के लिए दौड़ रहे लोग आसानी से उनके कायल हो गए। काम करने से पहले बाबूजक मोटे तौर पर एडवांस पैसे लेता था। लेकिन बाद में उन्होंने और कुछ नहीं दिया।

क्या है 'O'clock' का असली मतलब? क्या आप जानते हैं ओ क्लॉक में 'O' की दिलचस्प कहानी

परिवहन विशेष न्यूज

Origin meaning of oclock and what O stands for हम सभी अंग्रेजी भाषा में समय बताने के लिए ओव लॉक (Oclock) शब्द का इस्तेमाल करते हैं। जैसे- पांच बजे हैं को अंग्रेजी मे फाइव ओव लॉक कहा जाता है लेकिन व या आप जानते हो कि ओव लॉक असली मतलब व या है और इसमें ओ का मीनिंग व या है। अगर नहीं तो यहां पढ़िए ओ व लॉक की रोचक कहानी...

नई दिल ली। जब आप अंग्रेजी में समय बताते हैं तो वन टू 12 के बाद ओ' क्लॉक (O'clock) का इस्तेमाल करते हैं। क्या कभी आपके मन में सवाल आया कि ओ' क्लॉक का असली मतलब क्या है? ओ' क्लॉक में 'ओ' का क्या लेना-देना है? आइए हम आपको बताते हैं कि इन दोनों सवालें के जवाब और इसके पीछे की दिलचस्प कहानी...

'ओ' क्लॉक (O'clock) का इस्तेमाल अंग्रेजी भाषा में वक्त बताने के लिए किया जाता है। 14वीं शताब्दी में पहली बार 'ऑफ द क्लॉक' (of the clock) शब्द का इस्तेमाल किया गया था।

इसके बाद से समय बताने के लिए वन टू 12 के बाद 'ऑफ द क्लॉक' का यूज होने लगा। जैसे- हिंदी में तीन बजे हैं को अंग्रेजी में बताने के लिए- थ्री' ऑफ द क्लॉक (three of the clock) कहा जाता था। बता दे कि मध्ययुगीन काल में चर्च की घंटियों और घड़ी के टावरों से समय मापा जाता था।

यह ओ क्लॉक की असली कहानी

जैसे-जैसे भाषा का विकास हुआ, वैसे ही 'ऑफ द क्लॉक' (of the clock) में ऑफ द (of the) को सिर्फ 'ओ' (O) कर दिया गया। इसके बाद 'ऑफ द क्लॉक' को संक्षिप्त रूप में ओ' क्लॉक (O'clock) कहा और लिखा जाने लगा।

16वीं शताब्दी तक ओ' क्लॉक आम बोलचाल में शामिल हो गया। यानी कि ओ' क्लॉक शब्द की उत्पत्ति अंग्रेजी भाषा में शब्दों को छोटा और सरल बनाने की प्रक्रिया से हुई। इसका असली मतलब ऑफ द क्लॉक (three of the clock) था।

केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान की रेवेन्सा यूनिवर्सिटी का नाम बदलने की टिप्पणी के विरोध में मशाल जुलूस का आयोजन

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड उडीशा

भुबनेस्वर्: केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान की रेवेन्सा यूनिवर्सिटी का नाम बदलने की टिप्पणी के विरोध में आज कटक की सड़कों पर मशाल जुलूस का आयोजन किया गया है। सैकड़ों पुनर्जागरण छात्र, अतीत और वर्तमान, जुलूस में शामिल हुए, जिसने कॉलेज स्ट्रीट से क्वीनशैट क्लॉक टॉवर स्ट्रीट तक पुनर्जागरण विश्वविद्यालय की परिक्रमा की।पुराने छात्रों से युक्त 'सेव रेवेन्स लिगेसी' द्वारा एक मशाल जुलूस और रेवेन्स लेन में एक हस्ताक्षर अभियान, छात्र कांग्रेस, डीएसओ जैसे संगठनों द्वारा बैठकों और विरोध प्रदर्शनों ने आज रेवेन्सा परिसर को गति प्रदान की है। दूसरी ओर, शाम के बाद विश्वविद्यालय परिसर में गैर छात्रों के प्रवेश के विरोध में एबीवीपी सदस्यों द्वारा गेट के सामने प्रदर्शन करने की घटना से तनाव पैदा हो गया है।रेवेन्सा का नाम बदलने के विरोध में आज दोपहर विश्वविद्यालय के सामने वाली गली में पुराने छात्रों की एक बैठक हुई। इसमें पुरातन छात्रों ने नवजागरण के गौरवशाली इतिहास पर अपनी राय रखी और केंद्रीय मंत्री श्री प्रधान के भाषण का विरोध किया।

ऐसी मांग की गई कि केंद्रीय मंत्री नाम बदलने की टिप्पणी वापस लें और राज्य के लोगों से माफी मांगें। पुराने छात्रों की ओर से चेतावनी दी गई कि आने वाले दिनों में छात्र आंदोलन तेज किया जाएगा। बाद में शाम को, 500 से अधिक पूर्व और वर्तमान छात्रों के साथ एक मशाल जुलूस निकाला गया। इस अवसर पर रेनेसां लेन में हस्ताक्षर अभियान चलाया गया।

सहारा समूह को 15 दिन में करने होंगे 1000 करोड़ रुपये जमा, सुप्रीम कोर्ट का आदेश

परिवहन विशेष न्यूज

सुप्रीम कोर्ट ने गुरुवार को एक महत्वपूर्ण निर्णय में सहारा समूह को 15 दिनों की समय सीमा के भीतर एक एस्क्रो खाते में 1000 करोड़ रुपये जमा करने का आदेश दिया। शीर्ष अदालत के 2012 के आदेश के अनुपालन में निवेशकों का पैसा लौटाने के लिए 10 हजार करोड़ रुपये की राशि सेबी-सहारा रिफंड खाते में जमा की जानी है।

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने गुरुवार को एक महत्वपूर्ण निर्णय में सहारा समूह को 15 दिनों की समय सीमा के भीतर एक एस्क्रो खाते में 1,000 करोड़ रुपये जमा करने का आदेश दिया।

इसके अतिरिक्त न्यायालय ने मुंबई में अपनी वर्सोवा भूमि के विकास के लिए एक संयुक्त उद्यम में प्रवेश करने के समूह के प्रस्ताव को हरी झंडी दे दी, जिसका उद्देश्य 10 हजार करोड़ रुपये की राशि एकत्र करना है।

एस्क्रो खाता एक ऐसा खाता है, जिसमें दो या दो से अधिक पार्टियों द्वारा ट्रस्ट में धनराशि का लेनदेन किया जाता है। इसका मतलब है कि एक भरोसेमंद तीसरा पक्ष धन सुरक्षित रखेगा।

जज ने कही ये बात

शीर्ष अदालत के 2012 के आदेश के अनुपालन में निवेशकों का पैसा लौटाने के लिए 10 हजार करोड़ रुपये की राशि सेबी-सहारा रिफंड खाते में जमा की जानी है। जस्टिस संजीव खन्ना, एमएम सुंदरेश और बेला एम त्रिवेदी की पीठ ने कहा कि यदि संयुक्त उद्यम समझौता 15 दिनों के भीतर अदालत में दाखिल नहीं किया जाता है, तो वह वर्सोवा में 1.21 करोड़ वर्ग फीट जमीन 'जहां है, जैसी है' के आधार पर बेच देगी।

एक महीने बाद आगे की सुनवाई

पीठ ने कहा कि तीसरे पक्ष द्वारा जमा किए जाने वाले 1,000 करोड़ रुपये एस्क्रो खाते में रखे जाएंगे। यदि (संयुक्त उद्यम समझौते के लिए) इस अदालत द्वारा अनुमति नहीं दी जाती है, तो राशि तीसरे पक्ष को वापस कर दी जाएगी। अदालत ने मामले को एक महीने बाद आगे की सुनवाई के लिए सूचीबद्ध किया।

दशहरा, दीवाली और छठ पर घर जाने में नहीं होगी परेशानी, इन ट्रेनों में पाएं कन्फर्म सीट; बढ़ गए फेरे

दशहरा दिवाली और छठ जैसे त्योहारों के मौसम में ट्रेनों में बढ़ती भीड़ को देखते हुए रेलवे ने कई स्पेशल ट्रेनों की घोषणा की है। इसके साथ ही पहले से घोषित स्पेशल ट्रेनों के फेरे भी बढ़ाए जा रहे हैं। इन ट्रेनों में कामख्या-आनंद विहार टर्मिनल गुवाहाटी-आनंद विहार टर्मिनल कटिहार-अमृतसर और गुवाहाटी-श्री गंगानगर स्पेशल ट्रेन शामिल हैं। इसमें यात्री कन्फर्म टिकट पा सकते हैं।

नई दिल्ली। त्योहार के दिनों में नियमित ट्रेनों में यात्रियों को कन्फर्म टिकट मिलने में परेशानी हो रही है। सबसे अधिक भीड़ पूर्व दिशा की ट्रेनों में है। दशहरा, दीवाली और छठ के समय ट्रेनों में लंबी प्रतीक्षा सूची है। इसे देखते हुए कई त्योहार विशेष ट्रेनें घोषित की जा रही हैं।

इसके साथ ही पहले से घोषित विशेष ट्रेनों के फेरे बढ़ाए जा रहे हैं, जिससे कि यात्रियों को त्योहार के दिनों में घर जाने में किसी तरह की परेशानी न हो। अधिकारियों का कहना है कि भीड़ वाले रूट की समीक्षा की जा रही है। भीड़ के अनुसार विशेष ट्रेनों की घोषणा की जाएगी। जरूरत के अनुसार नियमित ट्रेनों में अतिरिक्त कोच लगाए जाएंगे।

इन ट्रेनों की बढ़ गई फेरें

कामख्या-आनंद विहार टर्मिनल विशेष ट्रेन (02525/02526) 15 सितंबर तक के लिए घोषित हुई थी। इसे अब एक दिसंबर तक चलाने का निर्णय लिया गया है।

13 सितंबर तक चलने वाली गुवाहाटी-आनंद विहार टर्मिनल विशेष (05671/05672) अब 29 नवंबर तक चलेगी।

कटिहार-अमृतसर विशेष (05734/05733) का परिचालन 21 सितंबर तक होना था। इसे बढ़ाकर अब 30 नवंबर तक कर दिया गया है।

गुवाहाटी-श्री गंगानगर विशेष ट्रेन (05636/05635) को 29 सितंबर तक चलाने की घोषणा की गई थी। अब इसे एक दिसंबर तक चलाया जाएगा।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023